اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ؕ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ ۙ قَالُوْٓا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ۚ﴿۴۷﴾ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ مِنْ قَبْلُ
وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿۴۸﴾ لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ۫ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ﴿۴۹﴾ وَ
لَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ
اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ۫ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿۵۰﴾ وَاِذَآ
اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ﴿۵۱﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿۵۲﴾ سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ
حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ؕ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۵۳﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ
رَبِّهِمْ ؕ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿۵۴﴾

आयत नं० 47 से 54

(और जिस क़ियामत में किये कामों का बदला मिलना है उस) **क़ियामत के इल्म का हवाला अल्लाह ही की तरफ़ दिया जा सकता है** (यानी इस सवाल के जवाब में कि क़ियामत कब आएगी ये ही कहा जाएगा कि इस का इल्म अल्लाह ही को है लोगों को इसका पता न होने का यह मतलब नहीं कि नहीं आएगी)**, और** (क़ियामत ही की क्या ख़ास बात है हर चीज़ का उस को इल्म है यहां तक कि) **कोई फल अपने गुच्छे में से नहीं निकलता और न किसी औरत के पेट में बच्चा रहता है और न उसके कोई बच्चा पैदा होता है मगर यह सब उसकी जानकारी से होता है, और जिस दिन अल्लाह तआ़ला उन** (मुशरिकों) **को पुकारेगा** (और कहेगा) **कि** (जिन को तुम ने मेरा साझी बना रक्खा था वो) **मेरे शरीक** (अब) **कहां हैं** (उन को बुलाओ तुम को इस मुसीबत से बचाएं) **वो कहेंगे कि** (अब तो) **हम आप से ये ही कहते हैं कि हम में कोई** (उस अक़ीदे का) **दावेदार नहीं** (यानी अपनी ग़लती का इक़रार करेंगे मगर उस वक़्त इक़रार करने से छुटकारा न होगा)(47) **और जिन-जिन को ये लोग पहले से** (यानी दुनिया में) **पूजा करते थे वो सब ग़ाइब हो जाएंगे और** (यह देख कर) **ये लोग समझ लेंगे कि उनके लिए बचाव का कोई रास्ता नहीं है** (उस वक़्त झूटे ख़ुदाओं का बेबस होना और अकेले अल्लाह का हक़ होना मालूम हो जाएगा)(48) **इन्सान** (जो तौहीद व ईमान से ख़ाली है उस) **का** (हाल यह है कि किसी सूरत) **तरक़्क़ी की चाहत**

से उस का जी नहीं भरता, और अगर उस को कुछ तकलीफ़ पहुंचती है तो ना उम्मीद होकर आस तोड़ देता (है और यह बहुत नाशुक्री और अल्लाह से बदगुमानी की निशानी) **है(49) और** (जब तकलीफ़ दूर हो जाती है तो उस वक़्त उस की यह हालत है कि) **अगर हम उस को किसी तकलीफ़ के बाद जो उस को पहुंची थी अपनी महरबानी का मज़ा चखा देते हैं तो कहता है कि यह तो मेरे लिए होना ही चाहिए था** (क्योंकि मेरी कोशिशें और फ़नकारी ऐसी ही थी और यह भी नाशुक्री और घमन्ड है) **और** (इस नेमत में यहां तक फूलता और भूलता है कि ऐसा भी कहता है कि) **मैं नहीं समझता कि क़ियामत आएगी और अगर** (मान लो आई भी और) **मैं अपने रब के पास पहुंचाया भी गया** (जैसा नबी कहते हैं) **तो मेरे लिए उसके पास भी भलाई ही है** (क्योंकि मैं हक़ पर हूं और इसका हक़दार हूं जबकि क़ियामत का इनकार कुफ़्र है और क़ियामत के आने पर इनआम का गुमान धोका है) **तो** (ये लोग यहां जो चाहे दावा कर लें अब जल्द ही) **हम इन काफ़िरों को उनके** (ये) **सब कारनामे ज़रूर बता देंगे, और उनको सख़्त अज़ाब का मज़ा चखा देंगे(50) और** (इसी तरह कुफ़्र व शिर्क का एक असर यह है कि) **जब हम** (ऐसे) **आदमी को नेमत देते हैं तो** (हम से और हमारे हुक्मों से) **मुंह मोड़ लेता है और करवट फेर लेता है** (जो बड़ी नाशुक्री है) **और जब उस को तकलीफ़ पहुंचती है तो** (नेमत छिन जाने पर बेसब्री से घबरा कर) **ख़ूब लम्बी चौड़ी दुआएं करता है(51)** (ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन इनकार करने वालों से) **कहिए कि** (सारे सबूतों के बावजूद भी अगर तुम क़ुरआन और पैग़म्बर को नहीं मानते तो) **भला यह बताओ कि अगर यह क़ुरआन अल्लाह के यहां से आया हो और फिर तुम इस का इनकार करो तो ऐसे आदमी से ज़्यादा कौन ग़लती में होगा जो** (इसकी) **मुख़ालफ़त में बहुत दूर निकल गया हो** (इसलिए इनकार में जल्दबाज़ी न करो बल्कि सोच समझ से काम लो ताकि हक़ बात समझ में आजाए)(52) **हम जल्द ही उन को अपनी** (क़ुदरत की) **निशानियां** (जो कि सबूत हों क़ुरआन की सच्चाई पर) **उनके आस पास में भी दिखाएंगे** (कि कही हुई ख़बर के हिसाब से सारा अरब जीता जाएगा) **यहां तक कि** (इन ख़बरों के पूरा होने से) **उन पर खुल जाएगा कि वो क़ुरआन हक़** (है कि उसकी पहले से कही बात किस तरह सच्ची हो रही) **है,** (अगर ये लोग आप का इनकार करें तो ग़म न करें) **क्या आप के रब की बात** (आप की सच्चाई की गवाही और तसल्ली के लिए) **काफ़ी नहीं कि वो हर चीज़ का गवाह** (है और उसने जगह-जगह आप की पैग़म्बरी की गवाही दी) **है(53) याद रक्खो कि वो लोग अपने रब के सामने जाने के बारे में शक में पड़े** (हैं इसलिए दिल में नहीं डरते और इनकार करते) **हैं,** (मगर) **याद रक्खो कि वो हर चीज़ को** (अपने इल्म के) **घेरे में**

लिए हुए है (बस इनके शक व शुबह को भी जानता है और उस पर सज़ा देगा)(**54**)।

नोटः- लम्बी दुआएं मांगना तो पसन्दीदा है जैसा कि हदीसों में आया है यहां काफ़िर की बेसब्री का बयान है कि नेमतें मिलने पर इतरा जाता है और मुसीबत आने पर बहुत घबरा जाता है जब कि मोमिन नेमतों पर शुक्र करता है और मुसीबतों पर सब्र करता है और दोनों हालतों में दुआ करता है।

42-सूरत-शूरा

इस मक्की सूरत में '5' रूकू और '53' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

حٰمٓ ۚ﴿۱﴾ عٓسٓقٓ ﴿۲﴾ کَذٰلِکَ یُوۡحِیۡۤ اِلَیۡکَ وَ اِلَی الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِکَ ۙ اللّٰہُ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ ﴿۳﴾ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی
الۡاَرۡضِ ؕ وَ ہُوَ الۡعَلِیُّ الۡعَظِیۡمُ ﴿۴﴾ تَکَادُ السَّمٰوٰتُ یَتَفَطَّرۡنَ مِنۡ فَوۡقِہِنَّ وَ الۡمَلٰٓئِکَۃُ یُسَبِّحُوۡنَ بِحَمۡدِ رَبِّہِمۡ وَ
یَسۡتَغۡفِرُوۡنَ لِمَنۡ فِی الۡاَرۡضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ اللّٰہَ ہُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِیۡمُ ﴿۵﴾ وَ الَّذِیۡنَ اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِہٖۤ اَوۡلِیَآءَ اللّٰہُ حَفِیۡظٌ
عَلَیۡہِمۡ ۫ۖ وَ مَاۤ اَنۡتَ عَلَیۡہِمۡ بِوَکِیۡلٍ ﴿۶﴾ وَ کَذٰلِکَ اَوۡحَیۡنَاۤ اِلَیۡکَ قُرۡاٰنًا عَرَبِیًّا لِّتُنۡذِرَ اُمَّ الۡقُرٰی وَ مَنۡ حَوۡلَہَا وَ
تُنۡذِرَ یَوۡمَ الۡجَمۡعِ لَا رَیۡبَ فِیۡہِ ؕ فَرِیۡقٌ فِی الۡجَنَّۃِ وَ فَرِیۡقٌ فِی السَّعِیۡرِ ﴿۷﴾ وَ لَوۡ شَآءَ اللّٰہُ لَجَعَلَہُمۡ اُمَّۃً وَّاحِدَۃً
وَّ لٰکِنۡ یُّدۡخِلُ مَنۡ یَّشَآءُ فِیۡ رَحۡمَتِہٖ ؕ وَ الظّٰلِمُوۡنَ مَا لَہُمۡ مِّنۡ وَّلِیٍّ وَّ لَا نَصِیۡرٍ ﴿۸﴾ اَمِ اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِہٖۤ
اَوۡلِیَآءَ ۚ فَاللّٰہُ ہُوَ الۡوَلِیُّ وَ ہُوَ یُحۡیِ الۡمَوۡتٰی ۫ وَ ہُوَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۹﴾ ع

आयत नं० 01 से 09

हामीम(01) ऐन सीन क़ाफ़ (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)**(02) इसी तरह** (ऐ पैग़म्बर) **आप पर और जो** (पैग़म्बर) **आप से पहले हो चुके हैं उनपर अल्लाह तआ़ला जो ज़बरदस्त** (कुदरत वाला) **हिकमत वाला है** (दूसरी सूरतों और किताबों की) **वही भेजता रहा** (है जिस तरह दीनी ज़रूरत के लिए यह सूरत आप पर उतारी जा रही) **है(03) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और वो ही सब से ऊपर और बड़ी शान वाला है(04)** (उसकी बड़ी शान को अगर कुछ ज़मीन वाले न पहचानें और न मानें मगर आसमानों में उसकी बड़ाई को पहचानने वाले फ़रिशते इतने ज़्यादा हैं कि) **ऐसा लगता है कि आसमान** (उनके बोझ की वजह से) **अपने ऊपर से फट पड़ेंगे** (कि बोझ उधर ही पड़ता है) **और** (वो) **फ़रिशते अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और ज़मीन वालों के लिए** (उनके गुनाहों की) **मुआफ़ी मांगते हैं, याद रक्खो कि अल्लाह ही मुआफ़ करने वाला रहमत करने वाला है(05) और जिन लोगों ने**

अल्लाह के सिवा दूसरे रखवाले बना रक्खे हैं अल्लाह तआ़ला उन (के बुरे कामों) **को देख भाल रहा है** (जिसकी सज़ा उनको मुनासिब वक़्त पर मिलेगी), **और तुम उनके** (कामों के) **ज़िम्मेदार नहीं हो(06) और हम ने इसी तरह** (जैसा कि आप देख रहे हैं) **आप पर अरबी कुरआन वही से भेजा है ताकि आप** (सबसे पहले) **मक्के के रहने वालों को और जो लोग इसके आस पास हैं उन को डराएं और** (यह डराना भी एक बड़ी चीज़ से है यानी) **जमा होने के दिन से डराएं** (मुराद इससे क़ियामत का दिन है जिसमें सब एक मैदान में जमा होंगे) **जिसमें ज़रा शक नहीं,** (जिसमें फ़ैसला यह होगा कि) **एक गिरोह जन्नत में** (दाख़िल) **होगा और एक गिरोह दोज़ख़ में** (दाख़िल) **होगा** (बस आप का काम इतना ही है कि उस दिन से उन को डराएं)**(07) और** (रहा उन का ईमान लाना या न लाना यह अल्लाह की मर्ज़ी पर है) **अगर अल्लाह तआ़ला चाहता इन सब को एक ही तरीक़े का बना देता** (यानी सब को ईमान नसीब हो जाता) **लेकिन** (इसमें कुछ भेद हैं जो उसने ऐसा नहीं चाहा बल्कि) **वो जिस को चाहता है** (ईमान देकर) **अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है** (और जिस को चाहता है उसके कुफ़्र व शिर्क पर छोड़ देता है कि वो रहमत में दाख़िल नहीं होता), **और** (उन) **ज़ालिमों का** (जो कुफ़्र व शिर्क में गरिफ़्तार हैं क़ियामत के दिन) **कोई हिमायती और मददगार नहीं(08) क्या इन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे रखवाले बना रक्खे हैं** (सच तो यह है कि) **अल्लाह तआ़ला ही रखवाला** (बनाने का हक़दार) **है और वो ही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा, और वो ही हर चीज़ पर कुदरत रखता** (है तो रखवाला बनाने के लाइक़ वो ही है जो हर चीज़ पर यहां तक कि मुर्दों को ज़िन्दा करने की कुदरत रखता) **है(09)**

नोटः- तमाम रूए ज़मीन में मक्के का एक ख़ास मक़ाम है जैसा कि हिजरत के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्के को मुख़ातिब करके फ़रमया कि ''तू मेरे नज़दीक अल्लाह की सारी ज़मीन से बेहतर है और सारी ज़मीन से ज़्यादा प्यारा है। अगर मुझे इस ज़मीन से निकाला न जाता तो मैं अपनी मर्ज़ी से कभी इस ज़मीन को न छोड़ता''। (मसनद)

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿١٠﴾ فَاطِرُ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا ۖ يَذْرَؤُكُمْ فِيهِ ۚ لَيْسَ كَمِثْلِهِ
شَيْءٌ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿١١﴾ لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٢﴾

आयत नं० 10 से 12

और (आप उन लोगों से जो तौहीद के बारे में झगड़ते और बहस करते हैं कहिए कि) **जिस-जिस बात में तुम** (हक़ पर चलने वालों के साथ) **झगड़ते हो उस** (सब) **का फ़ैसला अल्लाह तआला के सुपुर्द है** (वो यह है कि दुनिया में दलीलों और मोजिज़ों से तौहीद का हक़ होना साबित कर दिया और आख़रत में ईमान वालों को जन्नत में और ईमान न लाने वालों को जहन्नम में डाला जाएगा), **यह अल्लाह** (जिसकी यह शान है) **मेरा रब है** (और तुम्हारी मुख़ालफ़त से जो किसी तकलीफ़ व नुक़सान के पहुंचने का ख़तरा हो सकता है उसके बारे में) **उसी पर भरोसा रखता हूं और** (दुनिया व दीन के सब कामों में) **उसी की तरफ़ लौ लगाता हूं(10) वो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है,** (और तुम्हारा भी पैदा करने वाला है जैसा कि) **उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स के जोड़े बनाए और** (इसी तरह) **चौपाए जानवरों के जोड़े बनाए** (और) **उसी से वो तुम्हारी नस्ल चलाता है,** (वो ऐसी ख़ूबियों वाला है कि) **कोई चीज़ उसके बराबर नहीं और वो ही हर बात का सुनने वाला देखने वाला** (है जबकि दूसरों का सुनना देखना उसके मुक़ाबिले कुछ भी नहीं) **है(11) उसी के क़ब्ज़े में हैं कुन्जियां आसमानों और ज़मीन की** (बस) **वो जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और** (जिसको चाहे) **कम देता है, बेशक वो हर चीज़ का पूरा जानने वाला** (है हर एक को उसकी भलाई के हिसाब से देता) **है(12)**

नोटः- फ़ैसले के अल्लाह के सुपुर्द होने का मतलब यह है कि क़ुरआन और हदीस (यानी शरीअत) के हुक्मों को माने और आम आदमी जो क़ुरआन व हदीस को समझ नहीं सकते उन के हक़ में मुफ़्ती का फ़तवा ही शरीअत का हुक्म कहलाता है।

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ
اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَ
يَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ۝١٣ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝١٤
فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَ
اُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ؕ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ
يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝١٥

आयत नं० 13 से 15

अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों के वास्ते वो ही दीन तय किया जिस का उसने नूह (अलैहिस्सलाम) **को हुक्म दिया था और जिसको हमने आप के पास वही के वास्ते से भेजा है और जिस का हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा** (अलैहिमुस्सलाम) **को हुक्म दिया था** (और उनकी उम्मतों को यह कहा था) **कि इस दीन को क़ाइम रखना** (यानी इस पर जमे रहना) **और इसमें फूट न डालना** (कि किसी बात पर ईमान लाए और किसी बात पर ईमान न लाए या कोई ईमान लाए और कोई न लाए और शरीअत के किसी हुक्म को न बदलना, बस चाहिए तो यह था कि इसके क़ुबूल करने में हिचक न होती मगर फिर भी) **मुशरिकों को वो बात** (यानी तौहीद) **बड़ी भारी लगती है जिसकी तरफ़ आप उन को बुला रहे हैं,** (और इसी के साथ यह भी कि) **अल्लाह अपनी तरफ़ जिस को चाहे खींच लेता** (है यानी सच्चा दीन क़ुबूल करने की तौफ़ीक़ देता) **है और जो आदमी** (अल्लाह की तरफ़) **लौ लगाए उसे अपने पास पहुंचा देता है(13) और वो लोग जब कि उनके पास** (सही) **इल्म आ चुका था सिर्फ़ आपस की ज़िद्द** (और दुशमनी) **से अलग-अलग हो गये** (इस तरह कि पहले माल व दौलत और इज़्ज़त व हुकूमत की चाहत में मतलब अलग-अलग हुए फिर फ़िरक़े बन गये फिर आहिस्ता-आहिस्ता मज़हब अलग-अलग हो जाता है)**, और** (ये लोग इस ग़लती पर अज़ाब के ऐसे हक़दार हो गये थे कि) **अगर आप के रब की तरफ़ से एक ख़ास वक़्त तक के लिए** (मोहलत देने की) **एक बात पहले से तय न हो चुकी होती** (कि उनको अज़ाब आख़रत में होगा) **तो** (दुनिया ही में) **उन** (के झगड़ों) **का फ़ैसला हो चुका होता** (यानी अज़ाब से फ़ैसला कर दिया जाता)**, और जिन लोगों को उन** (पहली उम्मतों) **के बाद किताब दी गई है** (यानी पैग़म्बर के ज़माने के मुशरिक कि आप के वास्ते से उनको क़ुरआन पहुंचा) **वो** (लोग) **उस** (किताब) **की तरफ़ से ऐसे शक में पड़े हैं जिसने** (उनको) **उलझन में डाल रक्खा** (है मतलब यह कि पहली उम्मतों में से कुछ ने जैसे इनकार किया था इसी तरह अब इनकी नौबत आई) **है(14) सो आप** (किसी के इनकार से दिल थोड़ा न कीजिए बल्कि जिस तरफ़ आप उनको पहले से बुला रहे हैं) **उसी तरफ़** (उन को बराबर) **बुलाते रहिए और जिस तरह आप को** (बुलाने का) **हुक्म हुआ है** (उस पर) **जमे रहिए और उनकी** (ग़लत) **मर्ज़ी पर न चलिए** (यानी वो मुख़ालफ़त करके यह चाहते हैं कि हम को कहना छोड़ दें तो आप छोड़िए नहीं)**, और आप कह दीजिए कि** (मैं जिस बात की तरफ़ तुम को बुलाता हूं मैं ख़ुद भी उस पर अमल करता हूं तो) **अल्लाह ने जितनी किताबें उतारी हैं** (जिन में क़ुरआन भी दाख़िल है) **मैं** (उन) **सब पर ईमान लाता हूं और मुझ को यह**

(भी) **हुक्म हुआ है कि** (अपने और) **तुम्हारे बीच में इन्साफ़** (रक्खूं यानी यह नहीं कि तुम को तकलीफ़ में डालूं और ख़ुद आज़ाद रहूं बल्कि जिस चीज़ को तुम पर वाजिब व ज़रूरी कहूं अपने ऊपर भी उस को वाजिब) **रक्खूं,** (और इस पर भी अगर नर्म न हों तो आख़री बात यह है कि) **अल्लाह हमारा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक** (है यानी वो सब का हाकिम) **है,** (और) **हमारे किये काम हमारे लिए और तुम्हारे किये काम तुम्हारे लिए, हमारी तुम्हारी कुछ बहस नहीं, अल्लाह** (जो सब का मालिक है क़ियामत में) **हम सब को जमा करेगा और** (इसमें शक नहीं कि) **उसी के पास जाना है** (वो सब का फ़ैसला किये कामों के हिसाब से कर देगा इस वक़्त तुम से बहस बेकार है हां तबलीग़ किये जाएंगे)(15)।

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "जो आदमी मुसलमानों की जमाअत से एक बालिश्त भी जुदा हुआ उसने इस्लाम का हलक़ाए-अक़ीदत अपने गले से निकाल दिया"। (अबूदाऊद)

और एक हदीस में फ़रमाया कि "अल्लाह का हाथ जमाअत पर है"। (तिरमिज़ी)

और एक जगह फ़रमाया कि शैतान इन्सानों के लिए भेड़िया है जैसे बकरियों के गल्ले (रेवड़) के पीछे भेडिया लगता है तो वो उसी बकरी को पकड़ता है जो अपनी डार और गल्ले से पीछे या इधर उधर रह जाए। इसलिए तुम्हें चाहिए कि जमाअ़त के साथ रहो अलग न हो। (तफ़सीर मज़हरी)

وَ الَّذِیْنَ یُحَآجُّوْنَ فِی اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِیْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ عَلَیْهِمْ غَضَبٌ وَّ
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ﴿۱۶﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَ الْمِیْزَانَ ؕ وَ مَا یُدْرِیْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِیْبٌ ﴿۱۷﴾
یَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَ یَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الَّذِیْنَ
یُمَارُوْنَ فِی السَّاعَةِ لَفِیْ ضَلٰلٍۭ بَعِیْدٍ ﴿۱۸﴾

आयत नं० 16 से 18

और जो लोग अल्लाह तआ़ला (के दीन) **के बारे में** (मुसलमानों से) **झगड़े निकालते** (और बहसें करते) **हैं जब कि लोग उस** (की बात) **को मान चुके** (हैं यानी बहुत से समझदार आदमी मुसलमान होकर उसको मान चुके) **हैं उन लोगों की बहस उन के रब के नज़दीक झूट** (और

ग़लत) **है और उन पर** (अल्लाह की तरफ़ से) **गुस्सा** (पड़ने वाला) **है और उनके लिए** (क़ियामत में) **सख़्त अज़ाब** (होने वाला) **है** (और उससे बचने का तरीक़ा ये ही है कि अल्लाह को और उस के दीन को मानो यानी उसकी किताब पर चलो)(16) **अल्लाह ही है जिसने** (उस) **किताब** (यानी क़ुरआन) **को और** (उसमें) **इन्साफ़** (का जो ख़ास हुक्म है उस) **को उतारा** (जब यह किताब अल्लाह की है तो किताब को माने बिना अल्लाह को मानने का ऐतबार नहीं जैसे कुछ ग़ैर मुस्लिम जो अल्लाह को तो मानने का दावा करते हैं मगर क़ुरआन को नहीं मानते वो बख़्शिश के लिए काफ़ी नहीं)**, और** (ये लोग जो आप से क़ियामत का तय वक़्त पूछते हैं तो) **आप को** (इसकी) **क्या ख़बर** (लेकिन आप को इस का पता न होने का यह मतलब नहीं कि नहीं आएगी बल्कि ज़रूर आएगी और) **अजब नहीं कि क़ियामत नज़दीक हो**(17) (मगर) **जो लोग उस का यक़ीन नहीं रखते** (वो उस दिन से डरने के बजाए हंसी उड़ाते व इनकार करते हुए) **उसका तक़ाज़ा करते हैं** (कि वो जल्दी क्यों नहीं आ जाती) **और जो लोग यक़ीन रखने वाले हैं वो उससे** (कांपते और) **डरते हैं और ऐतक़ाद रखते हैं कि वो हक़** (है यानी उस का आना यक़ीनी) **है, याद रक्खो कि** (इन दोनों क़िस्म के लोगों में पहली क़िस्म के लोग यानी) **जो लोग क़ियामत** (का इनकार करते हैं और उस) **के बारे में झगड़ते** (व बहस करते) **हैं बड़ी दूर** (दराज़) **की गुमराही में** (पड़े) **हैं**(18)।

नोटः- मोमिनों का क़ियामत से डरना ऐतक़ादी है कि उसकी होलनाकी को सोच कर उससे घबराते हैं। और जिन पर अल्लाह की मुलाक़ात का शौक़ तारी हो जाए उससे उनकी घबराहट दब जाती है।

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝١٩ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝٢٠

आयत नं० 19 से 20

अल्लाह तआला (के सामने पेश होने यानी आख़रत को जो लोग भुला बैठे हैं दुनिया की नेमतों पर इतराकर और यह समझते हैं और कहते हैं कि अगर हमारे ये काम अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होते तो हम को यह ऐश व आराम क्यों देते अच्छी तरह समझ लो यह उन की भूल है ये दुनिया की दौलत व नेमत अल्लाह के राज़ी होने की दलील नहीं बल्कि इस की वजह तो यह है कि अल्लाह तआला दुनिया में आम तौर से) **अपने बन्दों पर महरबान है** (इसी आम रहमत की वजह से सब को रोज़ी देता है सहत व तन्दरूस्ती देता है जो छुपी भलाई व हिकमत की वजह से कम व ज़्यादा भी

होती है कि) **जिस को** (जितनी) **चाहता है रोज़ी देता** (है मगर रोज़ी सब को देता) **है और** (दुनिया में इस महरबानी से यह समझ लेना कि उन का तरीक़ा ठीक है और आख़रत में भी महरबानी जारी रहेगी सरासर धोका है वहां तो उनके बुरे कामों पर अज़ाब होगा जो कोई मुश्किल नहीं क्योंकि) **वो ताक़त वाला और ज़बरदस्त है(19)** (बस उनकी सारी ख़राबियों की जड़ दुनिया पर इतराना है उन को चाहिए कि इससे बाज़ आजाएं और आख़रत की फ़िक्र करें क्योंकि) **जो आदमी आख़रत की खेती चाहता हो हम उसको उस की खेती में तरक़्क़ी देंगे** (नेक काम खेती और उस पर मिलने वाला सवाब उस का फल है और उसकी तरक़्क़ी यह है कि सवाब बढ़ कर मिलेगा, जैसा कि क़ुरआन में कहा गया है कि एक नेकी का बदला दस गुना मिलेगा) **और जो दुनिया की खेती चाहता हो** (यानी सारी कोशिश व महनत दुनिया के लिए हो आख़रत के लिए कुछ कोशिश न करे) **तो हम उसको कुछ दुनिया** (अगर चाहें) **दे देंगे और आख़रत में उस को कुछ हिस्सा** (नहीं क्योंकि उस की शर्त ईमान है वो उनमें है) **नहीं(20)**।

नोटः- मौलाना अब्दुल ग़नी फूलपुरी रह० लिखते हैं कि हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० ने फ़रमाया कि जो आदमी सुबह को सत्तर (70) बार पाबन्दी से यह आयत पढ़ा करे वो रिज़्क़ की तंगी से बचा रहेगा। और फ़रमाया कि बहुत तजरबे वाला अमल है।

आयत ये ही है आयत नं० ''19'' यानी

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾

अल्लाहु लतीफुम बि इबादिही यरज़ुक़ु मंय्यशाउ, वहुवल क़विय्युल अज़ीज़०

اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾ ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ
اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ
حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾

आयत नं० 21 से 23

(सच्चा दीन तो अल्लाह का तय किया हुआ है मगर जो लोग उसको नहीं मानते तो) **क्या उनके** (बनाए हुए ख़ुदाई में) **कुछ साझी हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन तय कर दिया जिस की अल्लह ने इजाज़त नहीं दी** (मतलब यह है कि कोई हस्ती ऐसी नहीं अल्लाह के ख़िलाफ़ उसके बनाए हुए दीन का ऐतबार किया जा सके)**, और अगर** (अल्लाह की तरफ़ से) **एक फ़ैसले की बात** (तय) **न होती** (यानी यह कि उन पर असल अज़ाब मौत के बाद होगा) **तो** (दुनिया ही में) **उन का** (खुला) **फ़ैसला हो चुका होता, और** (आख़रत में) **इन ज़ालिमों को ज़रूर दर्दनाक अज़ाब होगा(21)** (उस दिन) **आप इन ज़ालिमों को देखेंगे कि अपने** (बुरे) **कामों** (के अज़ाब) **से डर रहे होंगे और वो उन पर** (ज़रूर) **पड़ कर रहेगा** (यह तो काफ़िरों का हाल होगा)**, और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये** (होंगे) **वो जन्नत के बाग़ों में** (दाख़िल) **होंगे वो जिस चीज़ को चाहेंगे अपने रब के पास उन को मिलेगी, ये ही बड़ा इनआम** (है न कि वो फ़ना होने वाली ऐश आराम जो दुनिया में मौजूद) **है(22) ये ही है जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को दे रहा है जो ईमान लाए और अच्छे काम किये,** (ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन काफ़िरों से यह) **कहिए कि मैं तुम से और कुछ मतलब नहीं चाहता सिवाए रिशतेदारी की मुहब्बत के** (यानी इतना चाहता हूं कि तुम से जो मेरी रिशतेदारी है उस का तो ध्यान करो और मुझे न सताओ और मेरी बात को तसल्ली के साथ सुन लो फिर अगर दिल चाहे तो मानलो और कुछ शक हो तो साफ़ कर लो)**, और** (मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुनाते हैं यानी) **जो आदमी कोई नेकी करेगा हम उस** (नेकी) **में ख़ूबी और ज़्यादा कर** (देंगे यानी उस पर जितना सवाब मिलना चाहिए हम उससे ज़्यादा सवाब) **देंगे, बेशक अल्लाह तआ़ला** (ताबेदार बन्दों के गुनाहों का) **बड़ा बख़्शने वाला** (और उनकी नेकियों की) **बड़ी क़द्र करने वाला** (और सवाब देने वाला) **है(23)**

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَ يَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَ يُحِقُّ الْحَقَّ
بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۴﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَ يَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَ
يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ۙ وَ يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ يَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَ الْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿۲۶﴾

आयत नं० 24 से 26

क्या ये लोग (आप के बारे में नऊज़ुबिल्लाह) **यह कहते हैं कि इन्होंने अल्लाह पर झूट बोहतान बान्ध रक्खा है** (कि पैग़म्बर होने और वही आने का झूटा दावा किया है) **सो** (उन की यह बात घड़ी हुई है अगर अल्लाह की पनाह आप सच्चे नबी न होते तो अल्लाह यह करामाती कलाम आप की ज़बान पर जारी नहीं कर सकते थे जैसा कि) **अल्लाह** (को यह भी कुदरत हासिल है कि) **अगर** (वो) **चाहे तो आप के दिल पर बन्द लगा दे** (और यह कलाम आप के दिल पर न उतरे न बाक़ी रहे बल्कि छिन जाए और आप बिल्कुल भूल जाएं और ऐसी सूरत में कलाम ज़बान पर ही नहीं आसकता)**, और अल्लाह तआ़ला** (की यह आदत है कि वो पैग़म्बरी के) **बातिल** (यानी झूटे दावे) **को मिटाया करता है** (चलने नहीं देता यानी ऐसा झूटा दावा करने वाला मोजिज़े नहीं दिखा सकता) **और** (पैग़म्बरी के) **हक़** (यानी सच्चे दावे) **को अपने हुक्मों से साबित** (और हावी) **किया करता है** (बस आप सच्चे और वो झूटे हैं)**, बेशक वो** (यानी अल्लाह तआ़ला) **दिलों** (तक) **की बातें जानता है** (बस अल्लाह तआ़ला को इनके अक़ीदे और किये काम सब की ख़बर है उन सब पर सज़ा देंगे)**(24) और** (जो लोग अपने कुफ़्र और बुरे कामों से तौबा करलें उन्हें मुआफ़ कर देगा क्योंकि) **वो ऐसा** (रहमत वाला) **है कि अपने बन्दों की** (सच्ची) **तौबा कुबूल करता है और वो** (उस तौबा की बरकत से) **सभी** (पिछले) **गुनाह मुआफ़ कर देता है और जो कुछ तुम करते हो वो उस** (सब) **को जानता है** (बस उस को यह भी मालूम है कि तौबा सच्चे दिल से की है या नहीं)(25) **और** (जब कोई आदमी कुफ़्र से तौबा करके मुसलमान हो गया तो उस की जो इबादतें पहले कुबूल न होती थी अब कुबूल होने लगेंगी क्योंकि अल्लाह तआ़ला) **उन लोगों की इबादत** (जिसमें दिखावा न हो) **कुबूल करता है जो ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये** (वो इबादतें ये ही नेक काम हैं और उन को कुबूल करने का मतलब यह है कि उन को सवाब देता है) **और उन को अपनी महरबानी से और ज़्यादा** (सवाब) **देता है, और जो लोग कुफ़्र** (के काम) **कर रहे हैं** (और ईमान नहीं लाए) **उन के लिए सख़्त अज़ाब** (तय) **है(26)**

नोटः- जो आदमी पैग़म्बरी का झूटा दावा करे उसके हाथ से कोई जादू कामयाब नहीं होता जब तक कि वो पैग़म्बरी का दावा न करे जादू चलता है, पैग़म्बरी का दावा करने के बाद उसका जादू अल्लाह तआ़ला चलने नहीं देते ताकि किसी को उस जादू में मोजिज़े का शुबह न हो जाए।

तौबा की हक़ीक़तः

एक यह कि जिस गुनाह को फ़िलहाल कर रहा है उसको छोड़ दे। दूसरे यह कि पहले जो गुनाह हुआ उस पर पछताए और तीसरे यह कि आगे कभी ऐसा न करने का पक्का इरादा करले। और कोई शरई फ़र्ज़ छोड़ा हुआ है तो उसे अदा करने में लग जाए। और अगर किसी का हक़ वाजिब है तो उसे अदा करे या मुआफ़ कराए।

وَ لَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِی الْاَرْضِ وَ لٰكِنْ یُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا یَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِیْرٌۢ بَصِیْرٌ ﴿۲۷﴾ وَ
هُوَ الَّذِیْ یُنَزِّلُ الْغَیْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَ یَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَ هُوَ الْوَلِیُّ الْحَمِیْدُ ﴿۲۸﴾ وَ مِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَ مَا بَثَّ فِیْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَ هُوَ عَلٰی جَمْعِهِمْ اِذَا یَشَآءُ قَدِیْرٌ ﴿۲۹﴾ وَ مَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِیْبَةٍ فَبِمَا
كَسَبَتْ اَیْدِیْكُمْ وَ یَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ ﴿۳۰﴾ وَ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ فِی الْاَرْضِ ۚۖ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّ
لَا نَصِیْرٍ ﴿۳۱﴾ وَ مِنْ اٰیٰتِهِ الْجَوَارِ فِی الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿۳۲﴾ اِنْ یَّشَاْ یُسْكِنِ الرِّیْحَ فَیَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰی ظَهْرِهٖ ؕ
اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۳۳﴾ اَوْ یُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَ یَعْفُ عَنْ كَثِیْرٍ ﴿۳۴﴾ وَّ یَعْلَمَ الَّذِیْنَ
یُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِیْصٍ ﴿۳۵﴾

आयत नं० 27 से 35

और (अल्लाह तआ़ला की हिकमत की निशानियों में से है कि उसने सब लोगों को ज़्यादा माल नहीं दिया क्योंकि) **अगर अल्लाह तआ़ला अपने सब बन्दों के लिए रोज़ी ज़्यादा कर देता तो वो दुनिया में** (अक्सर) **शरारत करने लगते** (क्योंकि जब सारे इन्सान मालदार होते और कोई किसी का मुहताज न होता तो कोई भी किसी से न दबता) **लेकिन** (यह भी नहीं किया कि बिल्कुल ही किसी को कुछ न दिया हो बल्कि) **जितनी रोज़ी चाहता है** (मुनासिब) **अन्दाज़ से** (हर एक के लिए) **उतारता है,** (क्योंकि) **वो अपने बन्दों** (की भलाइयों) **को जानने वाला** (और उन का हाल) **देखने वाला है (27) और वो ऐसा** (रहमत वाला) **है जो** (कभी-कभी) **लोगों के नाउम्मीद हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत** (के आसार दुनिया में) **फैलाता है** (आसार से मुराद खेती और फल फूल हैं)**, और वो** (सब का) **रखवाला** (और) **तारीफ़ों वाला है(28) और उसकी** (क़ुदरत की) **निशानियों में से पैदा करना है आसमानों का और ज़मीन का और** (उन) **जानदारों का जो**

उसने ज़मीन व आसमान में फैला रक्खे हैं, और वो जब चाहे (उन्हें दोबारा ज़िन्दा करके) **जमा कर लेने की कुदरत रखता है** (जैसा कि क़ियामत में होगा)(29) **और** (वो बदला लेने वाला मगर साथ ही मुआफ़ करने वाला भी जैसा कि) **तुम को** (ऐ गुनाहगारो) **जो कुछ मुसीबत** (असल में) **पहुंचती है वो तो तुम्हारे ही हाथों के किये हुए कामों से** (पहुंचती है और फिर भी हर गुनाह पर नहीं बल्कि किसी-किसी गुनाह पर) **और बहुत** (से गुनाहों) **को मुआफ़ ही कर देता है** (चाहे दोनो जहान में या सिर्फ़ दुनिया में)(30) **और** (अगर वो सब पर पकड़ने लगे तो) **तुम ज़मीन** (के किसी हिस्से) **में** (पनाह लेकर उसको) **हरा नहीं सकते, और** (ऐसे वक़्त में) **अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई हिमायती व मददगार नहीं** (हो सकता)(31) **और उसकी** (कुदरत की) **निशानियों में से जहाज़ हैं समन्दर में** (ऐसे ऊंचे-ऊंचे) **जैसे पहाड़** (यानी उन का समन्दर में चलना उस की कुदरत की दलील है)(32) **अगर वो चाहे तो हवा को ठहरा दे तो वो** (जहाज़) **समन्दर की सतह पर खड़े के खड़े रह जाएं** (यह उसी का काम है कि हवा को चलाता है और उससे वो जहाज़ चलते हैं)**, बेशक इसमें** (कुदरत के सबूत वाली) **निशानियां हैं हर सब्र करने वाले व शुक्र करने वाले** (यानी मोमिन) **के लिए(33)** (बस वो अगर चाहे तो हवा को रोक कर जहाज़ों को खड़ा कर दे) **या** (अगर वो चाहे ज़ोर की हवा चला कर) **उन जहाज़ों** (के सवारों) **को उन के** (बुरे) **कामों की वजह से तबाह कर दे और** (उनमें) **बहुत से लोगों को छोड़ दे** (यानी उस वक़्त न डूबें चाहे आख़रत में सज़ा पाएं)(34) **और** (उस तबाही के वक़्त) **उन लोगों को जो कि हमारी आयतों में झगड़े निकालते** (और बहसें करते) **हैं पता चल जाएगा कि** (अब) **उनके लिए बचाव** (की सूरत) **नहीं** (क्योंकि ऐसे वक़्त में वो भी अपने बनाए हुए माबूदों को लाचार समझते थे)(35)।

नोटः- कुछ हदीसों से साबित है कि जिन गुनाहों पर कोई सज़ा दुनिया में देदी जाती है मोमिन के लिए उससे आख़रत में मुआफ़ी हो जाती है। जैसा कि हाकिम ने हज़रत अ़ली रज़ि० से रिवायत किया है। (मज़हरी)

فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۚ ﴿٣٦﴾
وَ الَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَ الْفَوَاحِشَ وَ اِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ۚ ﴿٣٧﴾ وَ الَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَ
اَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۠ وَ اَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۠ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۚ ﴿٣٨﴾ وَ الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ

يَنْتَصِرُوْنَ ۝ وَ جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَ اَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَ
لَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَ
يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَ لَمَنْ صَبَرَ وَ غَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝

आयत नं० 36 से 43

सो (ऊपर तुम सुन चुके हो कि दुनिया की हर तमन्ना पूरी नहीं होती और चाहने की चीज़ आख़रत है तो दुनिया की चीज़ों में से) **जो कुछ तुम को दिया दिलाया गया है वो सिर्फ़** (कुछ दिनों की) **दुनिया की ज़िन्दगी के बरतने के लिए है** (कि उम्र के ख़ातमे के साथ उसका भी ख़ातमा हो जाएगा) **और जो** (बदला व सवाब आख़रत में) **अल्लाह के यहां है वो कहीं बेहतर और बाक़ी रहने वाला है** (यानी सदा रहने वाला है बस दुनिया की चाहत छोड़ कर आख़रत की चाहत करो मगर आख़रत के पाने के लिए कम से कम शर्त तो ईमान लाना और कुफ़्र छोड़ना है और आख़रत के पूरे दर्जों के लिए सभी ज़रूरी हुक्मों को अपनाना और सभी गुनाहों को छोड़ना ज़रूरी है बस) **वो** (सवाब जो ऊपर बताया गया) **उन लोगों के लिए है जो ईमान ले आए और अपने रब पर भरोसा करते हैं(36) और जो बड़े गुनाहों से और** (ख़ासकर) **बेहयाई की बातों से** (ज़्यादा) **बचते हैं और जब उनको गुस्सा आता है तो मुआफ़ कर देते हैं(37) और जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म माना और नमाज़ के पाबन्द हैं और उनका हर** (ख़ास) **काम** (जिसमें अल्लाह की तरफ़ से कोई तय हुक्म न हो) **आपस के मशवरे से होता है, और हमने जो कुछ उन को दिया है उनमें से** (नेक कामों में) **ख़र्च करते हैं(38) और जो ऐसे** (इन्साफ़ वाले) **हैं कि जब उन पर** (किसी तरफ़ से कुछ) **ज़ुल्म होता है तो वो** (अगर बदला लेते हैं तो) **बराबर का बदला लेते हैं** (ज़्यादती नहीं करते और यह मतलब नहीं कि मुआफ़ नहीं करते)**(39) और** (बराबर का बदला लेने के लिए हमने यह इजाज़त दे रक्खी है कि) **बुराई का बदला बुराई है वैसी ही** (शर्त यह है कि वो काम अपने आप में गुनाह न हो) **फिर** (बदला लेने की इजाज़त के बावजूद) **जो आदमी मुआफ़ कर दे और** (आपस के मुआमले का) **सुधार करले** (जिससे दुशमनी जाती रहे और दोस्ती हो जाए) **तो उस का सवाब** (वादे के हिसाब से) **अल्लाह के ज़िम्मे है,** (और जो बदला लेने में ज़्यादती करने लगे तो यह सुन ले कि) **बेशक अल्लाह तआला ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता(40) और जो** (ज़्यादती न करे बल्कि) **अपने ऊपर ज़ुल्म हो चुकने के बाद बराबर का बदला लेले तो ऐसे**

लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं(41) इल्ज़ाम तो सिर्फ़ उन लोगों पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं (चाहे शुरू में या बदला लेने के वक़्त) **और नाहक़ दुनिया में सरकशी** (और घमन्ड) **करते** (फिरते) **हैं, ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब** (तय) **है(42) और जो आदमी** (दूसरे के ज़ुल्म पर) **सब्र करे और मुआफ़ कर दे यह बेशक बड़े हिम्मत के कामों में से** (है यानी ऐसा करना बेहतर है और हिम्मत के कामों में से) **है(43)**

नोटः- एक हदीस में हज़रत हसन रज़ि० से रिवायत है कि "जब कोई क़ौम मशवरे से काम करती है तो ज़रूर उस को सही रास्ते की तरफ़ हिदायत कर दी जाती है"। (बुख़ारी)

हज़रत इब्राहीम नख़ई रह० ने फ़रमाया कि जहां यह ख़तरा हो कि मुआफ़ करने से ज़ालिम का हौसला बढ़ेगा वो और नेक लोगों को सताएगा वहां बदला लेना बेहतर होगा और जहां ज़ुल्म करने वाला अपनी ग़लती पर पछता रहा हो और ज़ुल्म पर उसकी हिम्मत बढ़ने का ख़तरा न हो तो वहां मुआफ़ कर देना बेहतर है। (क़रतबी)

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ
سَبِيْلٍ ﴿٤٤﴾ وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ
الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾ وَمَا كَانَ
لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٦﴾ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿٤٧﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ
اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ
يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ
اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾

आयत नं० 44 से 50

और (गुमराह लोगों का हाल यह होगा कि) **जिसको अल्लाह तआला गुमराह कर दे तो**

उसके बाद उस आदमी का (दुनिया में भी) **कोई काम बनाने वाला नहीं** (कि उसको राह पर ले आए), **और** (क़ियामत में भी बुरा हाल होगा जैसा कि उस दिन) **आप** (उन) **ज़ालिमों को देखेंगे कि जिस वक़्त उन को अज़ाब नज़र आजाएगा** (बहुत पछताते हुए) **कहते होंगे क्या** (दुनिया में) **वापस जाने की कोई सूरत** (हो सकती) **है** (ताकि फिर अच्छे काम करके आएं)**(44) और आप उन को इस हाल में देखेंगे कि वो दोज़ख़ के सामने लाए जाएंगे मारे तौहीन के झुके हुए होंगे** (और वो उस को) **नीची नज़र से देखते होंगे** (जैसे डरा हुआ आदमी देखा करता है)**, और** (उस वक़्त) **ईमान वाले** (अपने बचने का शुक्र करने के लिए और उनको बुरा भला कहते हुए) **कहेंगे कि पूरे नुक़सान वाले वो लोग हैं जो अपनी जानों से और अपने घर वालों से** (आज) **क़ियामत के दिन नुक़सान में पड़े, याद रक्खो कि ज़ालिम** (यानी मुशरिक व काफ़िर) **लोग सदा के अज़ाब में** (गरिफ़्तार) **रहेंगे(45) और** (वहां) **उन के कोई मददगार न होंगे जो अल्लाह से अलग** (होकर) **उनकी मदद करें, और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस** (के बचाव) **के लिए कोई रास्ता ही** (नहीं यानी न मजबूरी जिताना न किसी की मदद बस कुछ भी) **नहीं(46)** (आगे काफ़िरों को कहा जाता है कि ऐ लोगो जब) **तुम** (ने क़ियामत का हाल सुन लिया तो) **अपने रब का हुक्म** (ईमान वग़ैरह का) **मान लो इससे पहले कि ऐसा दिन आजाए जिसे अल्लाह की तरफ़ से टाला न जाएगा** (यानी जिस तरह दुनिया में अज़ाब हट जाता है आख़रत में ऐसी कोई सूरत न होगी)**, न तुम को उस दिन कोई** (और) **पनाह मिलेगी और न तुम्हारे बारे में कोई** (अल्लाह से) **रोक टोक करने वाला** (है कि इतना ही पूछले कि यह हाल क्यों बनाया गया) **है(47) फिर अगर ये लोग** (यह सुनकर भी) **मुंह फेरें** (और ईमान न लाएं) **तो** (आप फ़िक्र में न पड़ें क्योंकि) **हमने आप को उन पर पहरेदार बनाकर नहीं भेजा** (जिससे पूछताछ हो कि आप की देख रेख में उन से ये काम क्यों हुए, बल्कि) **आप के ज़िम्मे तो सिर्फ़** (हुक्म का) **पहुंचा देना है** (जिस को आप कर रहे हैं फिर आप इससे ज़्यादा फ़िक्र क्यों करें)**, और** (उनके हक़ से मुंह फेरने की वजह अल्लाह से ताल्लुक़ की कमज़ोरी है जिसकी निशानी यह है कि) **हम जब** (इस क़िस्म के) **आदमी को कुछ अपनी महरबानी का मज़ा चखा देते हैं तो वो उस पर** (इतरा कर) **ख़ुश हो जाता है** (और नेमत देने वाले पर निगाह करके शुक्र नहीं करता) **और अगर** (ऐसे) **आदमी पर उन के** (उन बुरे) **कामों के बदले में जो पहले अपने हाथों कर चुके हैं कोई मुसीबत आजाती है तो** (ऐसा) **आदमी नाशुक्री करने लगता** (है और ऐसा नहीं करता कि गुनाहों से तौबा करके मुआफ़ी के साथ इबादतों में लग कर अल्लाह की तरफ़ लौ लगाए और ये दोनो हालतें इस बात की निशानी हैं कि उसका ताल्लुक़ अपने

मज़ों से ज़्यादा और अल्लाह तआ़ला के साथ कम या बिल्कुल ही नहीं है और इसी से वो कुफ़्र में गरिफ़्तार हुआ) **है(48) अल्लाह ही का राज है सारे आसमानों में और ज़मीन में, वो जो चाहता है पैदा करता है,** (बस) **जिसको चाहता है बेटियां देता है और जिसको चाहता है बेटे देता है(49) या उन को** (जिसके लिए चाहता है) **जमा कर देता है** (कि) **बेटे भी** (देता है) **और बेटियां भी और जिसको चाहे बेऔलाद रखता है, बेशक वो बड़ा जानने वाला बड़ी कुदरत वाला है(50)।**

नोटः- हज़रत वासिला बिन असक़ा रज़ि० ने फ़रमाया कि जिस औरत की कोख से पहला बच्चा लड़की पैदा हो वो मुबारक होती है। (क़ुरतबी)

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ
عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿۵۱﴾ وَ كَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ
جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۲﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ
مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿۵۳﴾

आयत नं० 51 से 53

और किसी इन्सान की (दुनिया में) **यह शान नहीं कि अल्लाह तआ़ला उससे बातें करें मगर** (तीन तरीक़े से) **या तो इलहाम से** (कि दिल में कोई अच्छी बात डाल दें) **या पर्दे के बाहर से** (कुछ बात सुनादे जैसे मूसा अलैहिस्सलाम के साथ हुआ) **या किसी फ़रिशते को भेज दे कि वो अल्लाह के हुक्म से जो अल्लाह चाहता है वो वोही बात पहुंचा देता है,** (इसकी वजह यह है कि) **वो बड़ी ऊंची शान वाला है** (मगर जब तक वो ताक़त न दे कोई बात नहीं कर सकता है मगर इसके साथ) **बड़ी हिकमत वाला** (भी) **है** (इसलिए बन्दों की भलाई से उसने बात करने के ये तीन तरीक़े रक्खे हैं)**(51) और** (जिस तरह इन्सान के साथ बात करने का तरीक़ा बयान किया गया है) **इसी तरह हमने आप के पास** (भी) **वही यानी अपना हुक्म भेजा** (है और आप को नबी बनाया) **है,** (और इस वही से आप को इतना बड़ा इल्म मिला वर्ना इससे पहले) **आप को न यह ख़बर थी कि** (अल्लाह की) **किताब क्या चीज़ है और न यह ख़बर थी कि ईमान** (का सबसे ऊंचा दर्जा जिस पर अब है) **क्या चीज़ है** (यूं ईमान नबी को पैग़म्बरी से पहले भी हासिल होता है) **लेकिन हम**

ने (आप को पैग़म्बरी और कुरआन दिया और) **इस कुरआन को** (पहले आप के लिए और फिर दूसरों के लिए) **एक नूर बनाया** (जिससे आप को यह बड़ा इल्म और ऊंचा दर्जा मिला और) **जिससे हम अपने बन्दों में से जिसको चाहते हैं हिदायत करते हैं** (बस इसके बड़ा नूर होने में कोई शक नहीं अब जो अन्धा ही हो वो इस नूर से नफ़ा नहीं उठाता बल्कि इसका इनकार करता है जैसा ये ऐतराज़ करने वाले), **और इसमें कोई शक नहीं कि आप** (इस कुरआन और वही के वास्ते से आम लोगों को) **एक सीधे रास्ते की हिदायत कर रहे हैं**(52) **यानी उस अल्लाह के रास्ते की कि उसी का है जो कुछ है आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है,** (आगे उन हुक्मों को मानने और न मानने वालों के सवाब व अज़ाब का ज़िक्र है कि) **याद रक्खो सब काम उसी की तरफ़ लौटेंगे** (बस वो सब पर सवाब व अज़ाब देगा)(53)।

नोटः- यहूदियों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि हम आप पर कैसे ईमान ले आएं जब कि आप न अल्लाह तआला को देखते हैं और न उस से आमने सामने बात करते हैं जैसे कि मूसा अलैहिस्सलाम बात करते और अल्लाह तआला को देखते थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह कहना ग़लत है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला को देखा है इस पर ये आयत उतरी जिस का मतलब यह है कि किसी इन्सान के लिए अल्लाह तआला से आमने सामने बात करना इस दुनिया में मुमकिन नहीं ख़ुद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने भी आमने सामने बात नहीं की बल्कि पर्दे के पीछे से सिर्फ़ आवाज़ सुनी।

43-सूरत-ज़ुख़रफ़

इस मक्की सूरत में '7' रूकू और '89' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

حٰمٓ ۚ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ ﴿٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۚ ﴿٣﴾ وَ اِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ
حَكِيْمٌ ۭ ﴿٤﴾ اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿٥﴾ وَ كَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦﴾ وَ
مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٧﴾ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّ مَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾

आयत नं० 01 से 08

हामीम (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)**(01) क़सम** (है) **इस साफ़** (साफ़ बयान करने वाली) **किताब की(02) कि हम ने इसे अरबी ज़बान का कुरआन बनाया है ताकि** (ऐ अरब वालो) **तुम** (आसानी से) **समझ लो(03) और वो हमारे पास लोहे महफ़ूज़ में बड़े ऊंचे दर्जे की और हिकमत भरी किताब है** (बस जब वो समझने में आसान और ख़ास हमारी हिफ़ाज़त में और मोजिज़ों की वजह से बड़े रूतबे वाली और हिकमत की बातों से भरी है तो ऐसी किताब को ज़रूर मानना चाहिए लेकिन अगर तुम न मानो तब भी हम इसको भेजना न छोडेंगे)**(04) क्या हम तुम से इस नसीहत** (नामे) **को** (सिर्फ़) **इस बात पर हटा लेंगे कि तुम** (ताबेदारी की) **हद से बढ़ जाने वाले हो** (और इसको नहीं मानते यानी चाहे तुम मानो या न मानो नसीहत बराबर की जाएगी ताकि मानने वालों को नफ़ा हो और न मानने वालों पर सज़ा का सबूत पक्का हो जाए)**(05) और हम पहले लोगों में** (उनके झुटलाने के बावजूद) **बहुत से नबी भेजते रहे** (यह नहीं हुआ कि उनके झुटलाने की वजह से पैग़म्बरी का सिलसिला बन्द हो जाता)**(06) और** (ऐ पैग़म्बर जैसे हमने उनके झुटलाने की परवाह नहीं की इसी तरह आप भी कुछ परवाह और ग़म न कीजिए, क्योंकि) **उन** (पहले) **लोगों** (का भी यह हाल था कि उन) **के पास कोई नबी ऐसा नहीं आया जिस की उन्होंने हंसी न उड़ाई हो(07) फिर हमने उन लोगों को जो इन** (मक्का वालों) **से ज़्यादा ज़ोर आवर थे** (झुटलाने और हंसी उड़ाने की सज़ा में) **बर्बाद कर डाला और पहले लोगों की यह हालत हो चुकी** (है बस न

आप ग़म करें कि इन का भी ऐसा ही हाल होना है और न ये बेफ़िक्र हों कि नमूना मौजूद) **है(08)।**

नोटः- ऊपर आयत से मालूम हुआ कि जो आदमी दावत व तबलीग़ का काम करता हो उसे काम में लगे रहना चाहिए मायूस होकर नहीं बैठना चाहिए।

وَ لَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۙ﴿۹﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ
مَهْدًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۚ﴿۱۰﴾ وَ الَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً
مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَ الْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ۙ﴿۱۲﴾
لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَ تَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَ مَا
كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۙ﴿۱۳﴾ وَ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَ جَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ؕ﴿۱۵﴾
اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّ اَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿۱۶﴾ وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ
مُسْوَدًّا وَّ هُوَ كَظِيْمٌ ﴿۱۷﴾ اَوَ مَنْ يُّنَشَّؤُا فِي الْحِلْيَةِ وَ هُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ﴿۱۸﴾ وَ جَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ
عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَ يُسْئَلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَ قَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا
عَبَدْنٰهُمْ ؕ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ؕ﴿۲۰﴾ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ
مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿۲۱﴾ بَلْ قَالُوْۤا اِنَّا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤى اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَ كَذٰلِكَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ
قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَاۤ ۙ اِنَّا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤى اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿۲۳﴾ قٰلَ
اَوَ لَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۲۴﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۲۵﴾

आयत नं० 09 से 25

और अगर आप इन (मुशरिकों) **से पूछें कि आसमानों व ज़मीन को किसने पैदा किया है तो वो ज़रूर ये ही कहेंगे कि उन को ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाले और) **जानने वाले** (अल्लाह) **ने पैदा किया है** (तो जिस हस्ती ने अकेले इतनी बड़ी चीज़ें पैदा की हों तो इबादत भी अकेले उसी की करनी चाहिए)**(09) जिसने तुम्हारे** (आराम के) **लिए ज़मीन को फ़र्श** (की तरह) **बनाया और उस**

(ज़मीन) **में उसने तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि** (उन रास्तों पर चलकर) **तुम** (आसानी से) **अपने ठिकाने तक पहुंच सको**(10) **और जिसने आसमान से एक** (ख़ास) **अन्दाज़ से पानी उतारा फिर हम ने उस** (पानी) **से सूखी ज़मीन को** (नई) **ज़िन्दगी दी** (तो समझ लेना चाहिए कि) **इसी तरह तुम** (भी अपनी क़ब्रों से) **निकल जाओगे**(11) **और जिसने सब चीज़ों के जोड़े बनाए और तुम्हारे लिए वो कशतियां और चौपाए जानवर बनाए जिन पर तुम सवार होते हो**(12) **ताकि तुम उन** (कशतियों और जानवरों) **की पीठ** (और फ़र्श) **पर जम कर** (तसल्ली से) **बैठो फिर जब उस पर बैठ चुको तो अपने रब की** (इस) **नेमत को** (दिल से) **याद करो और** (ज़बान से) **यह कहो कि उसकी ज़ात पाक है जिसने इन चीज़ों को हमारे बस में कर दिया और हम तो ऐसे** (ताक़तवर और हुनरमन्द) **न थे जो उन को बस में कर लेते** (क्योंकि जानवर से ज़्यादा ताक़त नहीं और कशतियों को चलाना उसी ने इलहाम से सिखाया)(13) **और हम को अपने रब की तरफ़ लौट कर जाना है** (इसलिए इस पर सवार होकर हम शुक्र से बेपरवाई या घमन्ड नहीं करते)(14) **और** (तौहीद के सबूतों के बावजूद) **इन लोगों ने** (शिर्क अपनाया कि फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियां कहते हैं और उनकी इबादत करते हैं बस एक ख़राबी यह हुई कि उन्होंने) **अल्लाह के बन्दों में से** (जो मख़लूक़ होते हैं) **अल्लाह की औलाद ठहराई** (जब कि अल्लाह की कोई औलाद नहीं हो सकती), **बेशक** (ऐसा) **इन्सान खुला नाशुक्रा** (है कि अल्लाह तआला के साथ इतना बड़ा कुफ़्र करता है कि उसको औलाद वाला बताता) **है**(15) (और दूसरी ख़राबी यह कि ये लोग लड़की के पैदा होने को ऐब की बात समझते हैं और फिर अल्लाह के लिए बेटियां मानते हैं तो) **क्या अल्लाह ने अपनी मख़लूक़ में से** (तुम्हारी सोच से अपने लिए तो) **बेटियां पसन्द कीं और तुम्हारे लिए बेटे चुने**(16) **हालांकि** (तुम बेटियों को इतना बुरा समझते हो कि) **जब तुम में से किसी को उस** (बेटी के होने) **की ख़बर दी जाती है जिसको अल्लाह के नाम लगा रक्खा** (है यानी उस की औलाद बना रक्खा) **है तो** (इतना नाराज़ होता है कि) **सारे दिन उस का चेहरा उतरा रहता है और वो दिल ही दिल में घुटता रहता है**(17) (हालांकि लड़की होना कोई ऐब की बात नहीं लेकिन तुम तो उसे कमज़ोर व कमसमझ मानते हो तो) **क्या** (अल्लाह तआला ने औलाद बनाने के लिए लड़की को पसन्द किया है) **जो कि बनाव सिंघार में परवरिश पाए** (कि ज़ेवर और सजने संवरने में औरतों को ज़्यादा दिलचस्पी होती है जो निशानी है समझबूझ कम होने की) **और जो** (कमज़ोर होने की वजह से) **बहस मुबाहिसे में अपनी बात खुल कर भी नहीं कह सकती** (जैसा कि आम तौर से देखा भी जाता है यह दूसरी ख़राबी हुई)(18) **और** (तीसरी ख़राबी यह है कि) **उन्होंने फ़रिशतों को जो अल्लाह के** (मख़लूक़)

बन्दे हैं (चूंकि वो दिखाई नहीं देते इसलिए बिना अल्लाह के बताए उनके बारे में कुछ बात मालूम नहीं हो सकती और अल्लाह ने कहीं उनको औरत नहीं बताया लेकिन इन्होंने बिना दलील फ़रिशतों को) **औरत बना रक्खा है, क्या ये उनके पैदा होने के वक़्त मौजूद** (थे और देख रहे) **थे, बस उनका यह दावा** (जो बिना दलील है आमाल नामे में) **लिख लिया जाता है और** (क़ियामत में) **उनसे पूछताछ होगी(19) और वो लोग यह कहते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला** (इस बात को ख़ुशी से) **चाहता** (कि फ़रिशतों की इबादत न हो यानी इस इबादत से वो नाराज़ होता) **तो हम** (कभी) **उनकी इबादत न करते** (क्योंकि वो करने ही न देता बल्कि जबरन रोक देता जब नहीं रोका तो पता चला कि वो इनकी इबादत करने से ख़ुश है)**, उन को इस** (बात) **की कुछ ख़बर नहीं** (है) **सिर्फ़ अटकलें दौड़ाते हैं** (क्योंकि अल्लाह तआ़ला का किसी काम को बन्दों की मर्ज़ी पर छोड़ देना इस बात का सबूत नहीं कि वो इस काम पर राज़ी भी है)**(20) क्या हम ने उन को इस** (क़ुरआन) **से पहले कोई किताब दे रक्खी है कि ये** (इस दावे में) **उससे दलील लाते हैं(21)** (कुछ नहीं) **बल्कि वो कहते हैं कि हमने अपने बाप दादों को एक तरीक़े पर पाया है और हम भी उनके पीछे-पीछे रास्ता चल रहे हैं(22) और** (जिस तरह की बातें ये लोग कर रहे हैं) **इसी तरह हमने आप से पहले किसी बस्ती में कोई पैग़म्बर भेजा तो वहां के ख़ुशहाल लोगों ने** (शुरू में और ताबेदारों ने बाद में) **ये ही कहा कि हमने अपने बाप दादों को एक तरीक़े पर पाया है और हम भी उन्हीं के पीछे-पीछे चले जा रहें हैं(23)** (इस पर) **उनके** (उस) **पैग़म्बर ने** (उनसे) **कहा कि क्या** (बाप दादों की रस्मों पर ही चलते रहोगे) **अगर मैं उससे अच्छा** (सही) **ठिकाने पर पहुंचा देने वाला तरीक़ा तुम्हारे पास लाया हूं कि जिस पर तुमने अपने बाप दादों को पाया हो, वो** (दुशमनी से) **कहने लगे कि हम तो उस** (दीन) **को मानते ही नहीं जिस को देकर** (तुम्हारे दावे में) **तुम को भेजा गया है(24) सो** (जब दुशमनी हद से बढ़ गई तो उस वक़्त) **हम ने उन से बदला लिया सो देखिए झुटलाने वालों का कैसा** (बुरा) **अन्जाम हुआ(25)।**

नोटः- हज़रत अ़ली रज़ि० से रिवायत है कि सवारी पर चढ़ते वक़्त ''बिस्मिल्लाह'' कहे फिर सवार हो जान के बाद ''अलहम्दुलिल्लाह'' कहे और उसके बाद यह पढ़े ''सुबहानल्लज़ी सख़्ख़र लना हाज़ा व माकुन्ना लहू मुक़रिनीन। व इन्ना इला रब्बिना लमुनक़लिबून''। (क़ुरतबी)

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾ وَ
جَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَ
رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾ وَ لَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّ اِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَ قَالُوْا لَوْ لَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى
رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَ رَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَ رَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٢﴾

आयत नं० 26 से 32

और (वो वक़्त याद कीजिए) **जब कि इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा था कि मैं उन चीज़ों** (की इबादत) **से अलग हूं जिन की तुम इबादत करते हो**(26) **मगर हां** (उस अल्लाह से ताल्लुक़ रखता हूं) **जिसने मुझ को पैदा किया फिर वो ही मुझ को** (दीन व दुनिया की भलाई का) **रास्ता दिखाता है** (मतलब यह कि इन लोगों को इब्राहीम अलैहिस्सलाम का हाल याद करना चाहिए कि वो ख़ुद भी तौहीद के मानने वाले थे)(27) **और** (वसीयत से) **वो उस** (अक़ीदे) **को अपनी औलाद में** (भी) **बाक़ी रहने वाली बात कर गये** (यानी अपनी औलाद को भी वसीयत की जिस का असर कुछ-कुछ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने तक भी बराबर रहा यहां तक कि जहालत के ज़माने में भी अरब में कुछ लोग शिर्क से नफ़रत करते थे और यह वसीयत उन्होंने इसलिए की थी) **ताकि** (हर ज़माने में मुशरिक) **लोग** (तौहीद वालों से तौहीद का अक़ीदा सुन-सुन कर शिर्क से) **बाज़ आते रहें**(28) (मगर ये लोग फिर भी बाज़ नहीं आते और इस तरफ़ ध्यान नहीं करते) **बल्कि मैंने** (जो) **उन को और उनके बाप दादों को** (दुनिया का) **ख़ूब सामान दिया है** (उसमें मस्त होकर बेपरवा हो रहे हैं) **यहां तक कि** (उसी बेपरवाई की नींद से जगाने के लिए) **सच्चा कुरआन** (जो मोजिज़ा होने की वजह से अपनी सच्चाई की आप ही दलील है) **और साफ़-साफ़ बताने वाला रसूल** (अल्लाह की तरफ़ से) **आया**(29) **और जब उनके पास यह सच्चा कुरआन पहुंचा** (और उसका करिशमा दिखाई दिया) **तो कहने लगे कि यह जादू है और हम इसको नहीं मानते**(30) **और** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में काफ़िर लोग) **कहने लगे कि यह क़ुरआन** (अगर अल्लाह का कलाम है तो) **इन दोनो बस्तियों** (यानी मक्का और ताइफ़ के रहने वालों) **में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा** (गया यानी पैग़म्बर के लिए बड़ी शान वाला होना ज़रूरी है और इनके पास न माल है न हुकूमत तो ये पैग़म्बर नहीं हो सकते

और न इन को पैग़म्बर बनाया) **गया(31)** (अल्लाह तआला उनके इस शक को दूर करने के लिए कहते हैं कि) **क्या ये लोग आप के रब की** (ख़ास) **रहमत** (यानी पैग़म्बरी) **को** (ख़ुद) **बांटना चाहते** (हैं कि पैग़म्बरी हमारी राय से दी जानी चाहिए यह चाहते) **हैं,** (यह ना समझी है क्योंकि) **दुनिया की ज़िन्दगी में** (तो) **उन की रोज़ी हम ने** (ही) **बांट रक्खी है और** (उस बांटने में) **हमने एक को दूसरे पर बढ़त दे रक्खी है ताकि** (उससे यह फ़ाइदा हो कि) **एक दूसरे से काम लेता** (रहे और दुनिया का इन्तिज़ाम चलता) **रहे, और** (खुली और यक़ीनी बात है कि) **आप के रब की** (ख़ास) **रहमत** (यानी पैग़म्बरी) **तो उस** (दुनिया की दौलत व हुकूमत) **से कहीं बेहतर है जिसको ये लोग समेटते फिरते हैं** (बस जब दुनिया के रोज़गार को उनकी राय पर नहीं बांटा गया जो छोटे दर्जे की चीज़ है तो पैग़म्बरी जो ऊंचे दर्जे की चीज़ है वो क्योंकर उनकी राय पर दी जाती)(32)।

नोटः- हज़रत अब्दुल वहाब शरानी रह० ने फ़रमाया कि औलाद के सुधार के लिए सबसे ज़्यादा कारगर अमल यह है कि मां बाप उनके दीनी सुधार के लिए दुआ की पाबन्दी करें। अफ़सोस है कि इस आसान तदबीर से आजकल बेपरवाई आम होती जा रही है और इसके बुरे अन्जाम को मां बाप ख़ुद देख रहे हैं।

وَ لَوْ لَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّ مَعَارِجَ عَلَيْهَا
يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَ لِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّ سُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٤﴾ وَ زُخْرُفًا ؕ وَ اِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَ
الْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٥﴾

आयत नं० 33 से 35

और (ये काफ़िर लोग पैग़म्बरी के लिए माल व दौलत की ज़्यादती को शर्त समझते हैं जबकि पैग़म्बरी बड़ी शान की चीज़ है और दुनिया की दौलत व हुकूमत हमारे नज़दीक ऐसी गिरी हुई चीज़ है कि) **अगर यह बात न होती कि** (क़रीब-क़रीब) **सभी आदमी एक ही तरीक़े के** (यानी काफ़िर) **हो जाएंगे तो जो लोग अल्लाह के साथ कुफ़्र करते हैं** (और अल्लाह के सख़्त नापसन्दीदा हैं) **हम उन** (सब) **के लिए उनके घरों की छतें चान्दी की कर देते और ज़ीने भी** (चान्दी के कर देते) **जिन पर चढ़ा** (उतरा) **करते(33) और उनके घरों के दरवाज़े भी** (चान्दी के कर देते) **और तख़्त भी** (चान्दी के कर देते) **जिन पर तकिया लगा कर बैठते हैं(34) और** (ये ही चीज़ें) **सोने की भी**

(कर देते यानी कुछ चान्दी की कुछ सोने की, मगर यह सामान सब काफ़िरों को इसलिए नहीं दिया कि अक्सर लोगों में माल की हिर्स छाई हुई है बस कुछ थोड़े से आदमियों को छोड़ कर क़रीब-क़रीब सभी कुफ़्र अपना लेते इसलिए सब काफ़िरों को ज़्यादा दौलत नहीं दी और साफ़ बात है कि दुशमनों को इतना माल नहीं दिया करते इससे पता चला कि दुनिया का माल व दौलत कोई बड़ी चीज़ नहीं है बस वो पैग़म्बरी के रूतबे के लिए कोई चीज़ नहीं तो पैग़म्बर के लिए माल व दौलत को शर्त समझना नासमझी है बस यह कहना कि पैग़म्बर कोई दुनिया में बड़ा माना जाने वाला आदमी होना चाहिए बेअसल है पैग़म्बर के लिए जिन ख़ूबियों की ज़रूरत है वो हुजूर में कमाल दर्जा मौजूद हैं)**, और ये सब** (साज़ो सामान जिस का ऊपर ज़िक्र हुआ) **कुछ भी नहीं सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी की कुछ दिन की बहार** (है फिर फ़ना हो जानी) **है, और आख़रत** (जो सदा के लिए और इससे बेहतर है वो) **आप के रब के यहां परहेज़गारों के लिए है**(35)।

नोटः- एक हदीस में है कि ''अगर दुनिया अल्लाह के नज़दीक मच्छर के एक पर के बराबर भी दर्जा रखती तो अल्लाह तआ़ला किसी काफ़िर को उससे पानी का एक घूंट भी न देता''। (तिरमिज़ी)

इससे मालूम हुआ कि न माल व दौलत का ज़्यादा होना कोई बड़ाई की चीज़ है न इस की कमी इन्सान का रूतबा कम होने की निशानी है।

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾ وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَ
يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾ وَ
لَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ
كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾ اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ
مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَ
سَوْفَ تُسْئَلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَسْئَلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾

आयत नं० 36 से 45

और जो आदमी अल्लाह की नसीहत (यानी कुरआन और वही) **से** (जान बूझकर) **अन्धा बन जाए** (जैसे ये काफ़िर हैं कि सारी दलीलों के होते हुए जहालत से काम लेते हैं) **हम उस पर**

एक शैतान तैनात कर देते हैं बस वो (हर वक़्त) **उसके साथ रहता है(36) और वो** (साथ रहने वाले शैतान) **उन** (क़ुरआन से मुंह फेरने वालों) **को** (बराबर दीन के) **रास्ते से रोकते रहते हैं** (और साथ रहने का ये ही असर है) **और ये लोग** (दीन से दूर होने के बावजूद) **यह समझते हैं कि वो** (यानी हम) **सही रास्ते पर** (हैं सो उन का ग़म क्यों किया जाए जिन की गुमराही की यह सूरत और यह हालत हो उनके राह पर आने की क्या उम्मीदें) **हैं(37)** (और जल्दी ही यानी क़ियामत में उनकी आंखें खुल जाएंगी क्योंकि यह बेपरवाई दुनिया तक है) **यहां तक कि जब ऐसा आदमी हमारे पास आएगा** (और अपनी ग़लती पता चलेगी) **तो** (उस साथी शैतान से) **कहेगा कि काश मेरे और तेरे बीच में** (दुनिया में) **पूरब और पच्छिम के बराबर दूरी होती** (क्यों) **कि तू बहुत बुरा साथी था** (कि तूने मुझको गुमराह किया मगर यह पछतावा उस वक़्त काम न आएगा)**(38) और** (उनसे कहा जाएगा कि) **जब कि तुम** (दुनिया में) **कुफ़्र कर चुके थे तो आज यह बात** (भी) **तुम्हारे काम न आएगी कि तुम** (और शैतान) **सब अज़ाब में साझी हो** (जैसे दुनिया में कभी-कभी दूसरे को मुसीबत में साथ देख कर कुछ तसल्ली हो जाती है वहां अज़ाब बहुत ज़्यादा सख़्त होगा इसलिए दूसरे की तरफ़ ध्यान भी न होगा हर आदमी अपने को ही ज़्यादा मुसीबत में समझेगा)**(39) तो** (आप जब जान चुके कि उनके रास्ते पर आने की कोई उम्मीद नहीं तो) **क्या आप** (ऐसे) **बहरों को सुना सकते हैं या** (ऐसे) **अन्धों को और उन लोगों को जो कि खुली गुमराही में** (पड़े) **हैं रास्ते पर ला सकते हैं** (यानी उनको राह पर लाना आप के बस से बाहर है आप पीछे न पड़ें)**(40) फिर** (उनकी यह सरकशी ख़ाली जाने वाली नहीं बल्कि इस पर ज़रूर सज़ा होने वाली है चाहे आप की ज़िन्दगी में हो या आप के बाद हो, बस) **अगर हम** (दुनिया से) **आप को उठालें तो भी हम उन** (काफ़िरों) **से बदला लेने वाले हैं(41) या अगर उनसे जो हम ने अज़ाब का वादा कर रक्खा है वो** (आप की ज़िन्दगी में उन पर लाकर) **आप को** (भी) **दिखा दें तब भी** (कुछ मुश्किल नहीं क्योंकि) **वो हमारे बस में है** (मतलब यह कि अज़ाब ज़रूर होगा चाहे कब ही हो)**(42) तो आप** (तसल्ली रखिए और) **उस क़ुरआन को मज़बूती से थामे रहिए जो आप पर वही से भेजा गया है** (क्योंकि) **आप बेशक सीधे रास्ते पर हैं** (मतलब यह कि अपना काम किये जाइये और दूसरों के काम का ग़म न कीजिए)**(43) और यह क़ुरआन आप के लिए और आप की क़ौम के लिए बड़ी इज़्ज़त की चीज़ है और जल्द ही** (क़ियामत के दिन) **तुम सब से पूछा जाएगा** (कि तुम ने इसका क्या हक़ अदा किया)**(44) और** (काफ़िरों को सब से बड़ा ऐतराज़ तौहीद के अक़ीदे पर है इसके बारे में कहते हैं कि) **आप उन सब पैग़म्बरों से जिन को हमने आप से पहले भेजा है पूछ लीजिए** (यानी

उन की किताबों का जो हिस्सा मौजूद है उसमें पता कर लीजिए) **कि क्या हमने अल्लाह** (रहमान) **के सिवा** (कभी भी) **दूसरे माबूद ठहरा दिये थे कि उनकी इबादत की जाए** (मुराद इससे दूसरों को सुनाना है कि जिस का जी चाहे पता कर ले और किताबों में देखने को पैग़म्बरों से पूछना कह दिया गया है)(45)

नोटः- यहां मालूम हुआ कि इज़्ज़त और नेक नामी क़द्र की चीज़ है जिस पर शुक्र अदा करता रहे। मगर नेक काम अल्लाह की रज़ा के लिए करे नाम के लिए नहीं वर्ना रिया (दिखावा) हो जाएगा।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّیْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۴۶﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰیٰتِنَآ اِذَا هُمْ
مِّنْهَا یَضْحَكُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَ مَا نُرِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ اِلَّا هِیَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا٘ وَ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَ
قَالُوْا یٰۤاَیُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿۴۹﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ
یَنْكُثُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ نَادٰى فِرْعَوْنُ فِیْ قَوْمِهٖ قَالَ یٰقَوْمِ اَلَیْسَ لِیْ مُلْكُ مِصْرَ وَ هٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِیْ ۚ اَفَلَا
تُبْصِرُوْنَ ﴿۵۱﴾ؕ اَمْ اَنَا خَیْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِیْ هُوَ مَهِیْنٌ ۙ۬ وَّ لَا یَكَادُ یُبِیْنُ ﴿۵۲﴾ فَلَوْ لَاۤ اُلْقِیَ عَلَیْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ
اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِیْنَ ﴿۵۳﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِیْنَ ﴿۵۴﴾ فَلَمَّاۤ اٰسَفُوْنَا
انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۵۵﴾ۙ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّ مَثَلًا لِّلْاٰخِرِیْنَ ﴿۵۶﴾ع

आयत नं० 46 से 56

और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) **को अपनी निशानियां** (यानी मोजिज़े) **देकर फ़िरऔन के और उसके सरदारों के पास भेजा था सो उन्होंने** (उन लोगों के पास आकर) **कहा कि मैं सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **की तरफ़ से** (तुम लोगों की हिदायत के लिए) **पैग़म्बर** (होकर आया) **हूं** (मगर फ़िरऔन और उसके लोगों ने नहीं माना)(46) **फिर** (हमने दूसरी निशानियां सज़ाओं की सूरत में उनकी पैग़म्बरी साबित करने के लिए दिखाईं जैसे सूखा पड़ना मगर उन लोगों की फिर भी यह हालत रही कि) **जब मूसा** (अलैहिस्सलाम) **उनके पास हमारी** (वो) **निशानियां लेकर आए तो वो यकायक उन** (मोजिज़ों) **पर हंसने लगे** (कि ऐसी बातें तो वैसे भी हो जाती हैं जैसे तूफ़ान आना या सूखा पड़ना हालांकि उनका मोजिज़ा होना साफ़ दिखाई देता जैसा कि उस मुसीबत का सिर्फ़ दीन के मुख़ालिफ़ों पर आना और मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ से मुसीबत का दूर हो जाना)(47) **और हम उनको जो**

निशानी दिखलाते थे वो दूसरी निशानी से बढ़ कर होती थी (मतलब यह कि एक से एक बढ़कर निशानी दिखाई), **और हमने** (उन निशानियों से) **उन लोगों को अज़ाब में पकड़ा था ताकि वो** (अपने कुफ़्र से) **बाज़ आजाएं** (यानी वो निशायिां पैग़म्बरी की दलील भी थी और उनके लिए सज़ा भी थी मगर वो लोग बाज़ न आए जबकि मुसीबत दूर होने पर बाज़ आने का वादा भी कर लेते थे)(48) **और उन्होंने** (मूसा अलैहिस्सलाम से हर निशानी पर यह) **कहा कि ऐ जादूगर हमारे लिए अपने रब से उस बात की दुआ कर दीजिए जिसका उसने आप से वादा कर रक्खा है** (और वो बात है हमारे बाज़ आजाने पर मुसीबत का दूर कर देना हम वादा करते हैं कि अगर आप इस अज़ाब को दूर करादें तो) **हम ज़रूर राह पर आजाएंगे**(49) **फिर** (जब) **हमने वो अज़ाब उनसे हटा दिया तब ही उन्होंने** (अपना) **वादा तोड़ दिया**(50) **और फिरऔन ने** (यह सोच कर कभी मोजिज़े देख कर आम लोग मुसलमान हो जाएं) **अपनी क़ौम में मुनादी कराई** (और उस मुनादी में) **यह बात कही** (यानी कहलवाई) **कि ऐ मेरी क़ौम क्या मिस्र की हुकूमत मेरे हाथ में नहीं है और** (देखो) **ये नहरें मेरे** (महल के) **नीचे बह रही हैं क्या तुम** (ये चीज़ें) **देखते नहीं हो**(51) (और मूसा अलैहिस्सलाम के पास कुछ भी सामान नहीं तो मैं बेहतर और बात मानने के क़ाबिल हूं या मूसा अलैहिस्सलाम) **बल्कि मैं** (ही) **बेहतर हूं उस आदमी से** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम से) **जो कि कुछ इ़ज़्ज़तदार** (भी) **नहीं और साफ़ बोल नहीं सकता**(52) (और यह आदमी अपने आप को पैग़म्बर बताता है) **तो इसके** (हाथों में) **सोने के कंगन क्यों नहीं डाले गये** (जैसा दुनिया के बादशाहों की आदत है कि जब किसी पर ख़ास महरबानी करते हैं तो उसको आम दरबार में सोने के कंगन पहनाते हैं मतलब यह कि अगर इस आदमी को पैग़म्बरी मिलती तो ख़ुदा की तरफ़ से उसके हाथ में सोने के कंगन होते) **या फ़रिशते इसके साथ पर बान्ध कर आए होते** (जैसा कि शाही हाकिमों का जुलूस इसी शान से निकलता है)(53) **बस उसने** (ऐसी बातें करकर के) **अपनी क़ौम को बेवक़ूफ़ बनाया और वो उसके कहने में आगये,** (और) **वो लोग** (कुछ पहले से भी) **शरारत के भरे थे** (इस वजह से फ़िरऔन की बातों का उन पर ज़्यादा असर हुआ)(54) **फिर जब उन लोगों ने** (बराबर कुफ़्र व मुख़ालफ़त करके) **हम को ग़ुस्सा दिलाया तो हमने उन सब को डुबो दिया**(55) (और) **हमने उनको एक गई गुज़री क़ौम और आने वाले लोगों के लिए सीख का सामान बना दिया** (कि आने वाली नस्ल एक दूसरे को सुनाती कि उन्होंने ऐसे बुरे काम किये और उनका ऐसा अन्जाम हुआ)(56)।

नोटः- मक्के के काफ़िरों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह ऐतराज़ किया कि आप मालदार नहीं हैं यहां उस का जवाब दे दिया गया कि फ़िरऔन और उसकी क़ौम ने भी ये ही ऐतराज़ मूसा अलैहिस्सलाम पर किया था मगर उनका अन्जाम क्या हुआ।

وَ لَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ۝٥٧ وَ قَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا
جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ۝٥٨ اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَ جَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝٥٩ وَ لَوْ
نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ۝٦٠ وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَ اتَّبِعُوْنِ ؕ هٰذَا
صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٦١ وَ لَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٦٢ وَ لَمَّا جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ
جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَ لِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ۝٦٣ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَ
رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٦٤ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ
يَوْمٍ اَلِيْمٍ ۝٦٥

आयत नं० 57 से 65

और (एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि अल्लाह के सिवा जिस किसी की इबादत की जाती है उनमें से किसी में कोई भलाई नहीं इस पर कुछ लोगों ने यह ऐतराज़ किया कि ईसाई लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की इबादत करते हैं मगर उनके बारे में आप कहते हैं कि उनमें भलाई ही भलाई थी इसके जवाब में अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **जब मरयम के बेटे** (ईसा अलैहिस्सलाम) **के बारे में मिसाल दी गई तो यकायक आप की क़ौम के लोग उस** (ऐतराज़ के सुनने) **से** (मारे ख़ुशी के) **चिल्लाने लगे(57) और** (उस ऐतराज़ करने वाले के साथ मिलकर) **कहने लगे कि** (बताइये आप के नज़दीक) **हमारे माबूद ज़्यादा बहतर हैं या ईसा** (अलैहिस्सलाम बेहतर हैं मतलब यह कि आप ईसा अलैहिस्सलाम को तो यक़ीन से बेहतर समझते हैं तो जब उनकी इबादत हुई तो उनमें भी भलाई नहीं यानी आप जिनको भला कहते हैं उनकी भी इबादत हुई इससे साबित हुआ कि शिर्क सही है)**, उन लोगों ने जो यह** (अजीब ऐतराज़) **आप से बयान किया है तो सिर्फ़ झगड़ने के** (लिए न कि सच्चाई जानने के) **लिए,** (और उनका झगड़ना कुछ इसी ऐतराज़ के साथ नहीं) **बल्कि ये लोग** (अपनी आदत से) **झगड़ालू ही** (हैं कि अक्सर बातों में झगड़े निकालते)

हैं(58) (आगे जवाब है यानी) **ईसा** (अलैहिस्सलाम) **तो सिर्फ़ एक ऐसे बन्दें हैं जिन पर हमने** (पैग़म्बरी देकर अपना) **इनआम किया और उनको बनी इस्राईल के लिए** (पहले और दूसरों के लिए बाद में) **हमने** (अपनी कुदरत का) **एक नमूना बनाया था** (ताकि लोग यह समझ लें कि अल्लाह तआ़ला को इस तरह बिना बाप के पैदा करना भी कुछ मुश्किल नहीं)(59) **और** (हम तो इससे ज़्यादा कामों की कुदरत रखते हैं कि) **अगर हम चाहते तो हम तुम से फ़रिश्तों को पैदा कर देते** (जिस तरह तुम से तुम्हारे बच्चे पैदा होते हैं) **कि वो ज़मीन पर** (इन्सान की तरह) **एक के बाद दूसरे रहा करते** (यानी पैदाइश भी इन्सानों की तरह होती और मौत भी बस बिना बाप के पैदा होना ईसा अलैहिस्सलाम के माबूद होने की दलील नहीं बन सकता)(60) **और वो** (यानी ईसा अलैहिस्सलाम) **क़ियामत के यक़ीन की निशानी हैं** (कि जब ऐसे पैदा हो सकते हैं तो क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा होना भी हैरानी की बात नहीं) **तो तुम लोग उस** (के आने में) **शक न करो और** (तौहीद व आख़रत के बारे में) **तुम लोग मेरा कहना मानो,** (जिस बात की तरफ़ मैं तुम को बुलाता हूं) **यह सीधा रास्ता है**(61) **और तुम को शैतान** (इस राह पर आने से) **रोकने न पाए वो बेशक तुम्हारा खुला दुशमन है**(62) **और** (आगे हज़रत ईसा के कलाम से तौहीद की तस्दीक़ और शिर्क के बुरा होने का बयान है कि) **जब ईसा** (अलैहिस्सलाम खुले-खुले) **मोजिज़ लेकर आए तो उन्होंने** (लोगों से) **कहा कि मैं तुम्हारे पास समझ की बातें लेकर आया हूं** (और इसलिए आया हूं ताकि तुम्हारे अक़ीदे का सुधार करूं) **ताकि कुछ बातें** (जाइज़ व नाजाइज़ की) **जिन में तुम झगड़ते हो तुम से बयान कर दूं** (जिस से शक दूर होकर झगड़ा ख़त्म हो जाए) **तो तुम लोग अल्लाह से डरो** (और मेरी पैग़म्बरी का इनकार न करो क्योंकि यह अल्लाह की मुख़ालफ़त है) **और मेरा कहना मानो**(63) (और ईसा अलैहिस्सलाम ने यह भी कहा कि) **बेशक अल्लाह ही मेरा रब है और तुम्हारा भी रब है तो** (सिर्फ़) **उसी की इबादत करो,** (और) **ये ही** (तौहीद) **सीधा रास्ता है**(64) **सो** (ईसा अलैहिस्सलाम के तौहीद के इस साफ़ बयान के बावजूद फिर भी) **बहुत से गिरोहों ने** (इस बारे में) **आपस में फूट डाल ली** (यानी तौहीद के ख़िलाफ़ तरह-तरह के मज़हब बना लिए) **सो इन ज़ालिमों** (यानी मुशरिकों) **के लिए एक दर्द भरे दिन के अज़ाब से बड़ी ख़राबी** (होने वाली) **है** (बस हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने तो ख़ुद तौहीद की तरफ़ बुलाया इसलिए उनकी इबादत करना शिर्क के सही होने की दलील नहीं बन सकता)(65)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि बुराई उन माबूदों की की गई जो ख़ुद अपनी इबादत किये जाने को पसन्द करते हों जैसे शैतान। और जो ख़ुद अल्लाह की इबादत करते और दूसरों को भी ये ही कहते उनमें बुराई नहीं। हां उनकी इबादत करना बुरा है जैसे पैग़म्बर और फ़रिशते।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٦٦ اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَىٕذٍۭ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا
الْمُتَّقِيْنَ ۝٦٧ يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَ لَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝٦٨ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝٦٩
اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝٧٠ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّ اَكْوَابٍ ۚ وَ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ
الْاَنْفُسُ وَ تَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَ اَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٧١ وَ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِیْۤ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٧٢
لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝٧٣ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِیْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۝٧٤ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَ
هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝٧٥ وَ مَا ظَلَمْنٰهُمْ وَ لٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧٦ وَ نَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ؕ قَالَ
اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ۝٧٧

आयत नं० 66 से 77

ये लोग (सच्चाई जानने के बावजूद ग़लती पर जमे हुए हैं तो इसका मतलब यह हुआ कि) **बस क़ियामत का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि वो उन पर अचानक आपड़े और उनको ख़बर भी न हो**(66) (और क़ियामत ऐसी चीज़ है कि दुनिया के) **सब दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुशमन हो जाएंगे सिवाए अल्लाह से डरने वालों** (यानी ईमान वालों) **के**(67) (और उन मोमिनों से कहा जाएगा कि) **ऐ मेरे बन्दो तुम पर आज कोई डर** (की बात पड़ने वाली) **नहीं और न तुम्हें कोई ग़म होगा**(68) **यानी वो बन्दे जो हमारी आयतों पर ईमान लाए थे और हमारा कहना मानते थे**(69) **तुम और तुम्हारी** (ईमानदार) **बीवियां ख़ुशी-ख़ुशी जन्नत में दाख़िल हो जाओ**(70) (और जन्नत में) **उनके पास सोने की पलेटें** (खाने की चीज़ों से भरी हुई) **और गलास** (पीने की चीज़ों से भरे हुए) **लाए जाएंगे** (यानी ग़िलमान लाएंगे) **और वहां वो चीज़ें मिलेंगी जिन को जी चाहेगा और जो आंखों को अच्छी लगें और** (उनसे कहा जाएगा कि) **तुम यहां सदा रहोगे**(71) **और** (यह भी कहा जाएगा कि) **यह वो जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिये गये** (तुम से कभी न ली जाएगी) **अपने नेक कामों के बदले में**(72) (और) **तुम्हारे लिए इसमें बहुत से फल हैं जिन**

में से खा रहे हो(73) (आगे काफ़िरों का ज़िक्र है कि) **बेशक मुजरिम** (यानी काफ़िर) **लोग दोज़ख़ के अज़ाब में सदा रहेंगे**(74) **वो** (अज़ाब) **उन** (पर) **से हल्का न किया जाएगा और वो उसी** (अज़ाब) **में मायूस पड़े रहेंगे**(75) **और** (आगे अल्लाह तआला कहते हैं कि) **हमने उन पर** (ज़रा) **ज़ुल्म नहीं किया** (कि नाहक़ अज़ाब दिया हो) **लेकिन ये ख़ुद ही ज़ालिम थे** (कि कुफ़्र व शिर्क करके अपना नुक़सान कर लिया)(76) **और** (जब वो छुटकारे से बिल्कुल मायूस हो जाएंगे उस वक़्त मौत की तमन्ना करेंगे और दोज़ख़ के दारोग़ा मालिक नाम के फ़रिशते को) **पुकारेंगे कि ऐ मालिक** (तुम ही दुआ करो कि) **तुम्हारा रब** (हम को मौत देकर) **हमारा काम ही तमाम कर दे, वो** (फ़रिशता) **जवाब देगा कि तुम सदा इसी हाल में रहोगे** (न यहां से निकलोगे और न मरोगे)(77)।

नोटः– ऐतबार उस दोस्ती का है जो आख़रत में बाक़ी रहे और वो दोस्ती वो है जो अल्लाह के लिए हो।

لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۝٧٨ اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ۝٧٩ اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا
لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَ نَجْوٰىهُمْ ؕ بَلٰى وَ رُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ۝٨٠ قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ
الْعٰبِدِيْنَ ۝٨١ سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝٨٢ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَ يَلْعَبُوْا حَتّٰى
يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ۝٨٣ وَ هُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّ فِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۝٨٤ وَ
تَبٰرَكَ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ۚ وَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٨٥ وَ لَا
يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَ هُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝٨٦ وَ لَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ
خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝٨٧ وَ قِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝٨٨ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَ قُلْ
سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٨٩

आयत नं० 78 से 89

(और ऊपर जिन सज़ाओं का बयान हुआ उनकी वजह यह है कि) **हम ने सच्चा दीन** (जिसका ज़रूरी हिस्सा तौहीद व पैग़म्बरी का यक़ीन है) **तुम्हारे पास पहुंचाया लेकिन तुम में अक्सर आदमी सच्चे दीन से नफ़रत रखते हैं**(78) **हां क्या उन्होंने** (पैग़म्बर को नुक़सान पहुंचाने के बारे में) **मन बना लिया है सो हमने भी एक फ़ैसला ले लिया है** (और खुली बात है कि अल्लाह के सामने

उनकी बात चल नहीं सकती इसलिए आप बचे रहे और वो नाकाम और आख़िर को जंगे बद्र में हलाक हुए)(79) (ये लोग जो आप को नुक़सान पहुंचाने के लिए छुप कर साज़िशें करते हैं) **क्या वो यह समझते हैं कि हम उनकी चुपके-चुपके** (कही हुई) **बातों को और उनके** (छुप कर किये) **मशवरों को नहीं सुनते,** (बल्कि) **हम ज़रूर सुनते हैं और** (इसके अलावा) **हमारे फ़रिशते** (जो कामों के लिखने वाले) **उनके पास हैं वो भी लिखते हैं(80) आप** (इन मुशरिकों से) **कहिए कि** (तुम जो अल्लाह के औलाद बताते हो तो) **अगर** (मानलो) **अल्लाह के औलाद हो तो सब से पहले उसकी इबादत करने वाला मैं हूं** (यानी उसके कोई औलाद नहीं है)(81) **आसमानों और ज़मीन का मालिक जो कि अर्श का मालिक है उन बातों से पाक है जो ये** (मुशरिक) **लोग** (उसके बारे में) **बयान कर रहे हैं(82)** (जब ये लोग सच्चाई जानने के बाद भी अपनी दुशमनी से बाज़ नहीं आते) **तो आप उनको इसी धन्धे और खेल तमाशे में रहने दीजिए** (यानी न उनकी मुख़ालफ़त की परवाह कीजिए और न उनके ईमान न लाने का ग़म कीजिए) **यहां तक कि वो अपने उसी दिन से जा मिलें जिस का उनसे वादा किया जाता है** (उस वक़्त सब असलीयत पता चल जाएगी)(83) **और वो ही ज़ात जो आसमानों में भी इबादत के क़ाबिल है और ज़मीन में भी इबादत के क़ाबिल है, और वो ही बड़ी हिकमत वाला और बड़े इल्म वाला** (है और कोई इल्म व हिकमत में उस का साझी नहीं बस इबादत भी ख़ालिस उसी के लिए) **है(84) और बड़ी शान है उसकी जिसकी हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में और उनके बीच की सारी चीज़ों में, और उसी के पास क़ियामत का इल्म है** (जिसकी किसी को ख़बर नहीं) **और तुम सब उसी के पास लौट कर जाओगे** (और उसको हिसाब दोगे)(85) **और** (उस वक़्त ख़ुदाई में किसी का साझी न होना ऐसा साबित हो जाएगा कि) **अल्लाह के सिवा जिन माबूदों को ये लोग पुकारते हैं वो सिफ़ारिश** (तक) **न कर सकेंगे हां जिन लोगों ने हक़ बात** (मानी यानी कलमे का) **इक़रार किया था और वो** (दिल से) **तस्दीक़ भी किया करते थे** (वो अलबत्ता अल्लाह के हुक्म से ईमान वालों की सिफ़ारिश कर सकेंगे मगर इससे काफ़िरों को क्या फ़ाइदा)(86) **और अगर आप उनसे पूछें कि उनको** (यानी तुम को) **किस ने पैदा किया है तो ये ही कहेंगे कि अल्लाह ने** (पैदा किया है) **तो** (साफ़ बात है कि इबादत का हक़दार वो ही हो सकता है जो पैदा करने की क़ुदरत रखता है फिर भी) **ये लोग** (ख़ुदा जाने) **किधर उल्टे चले जाते हैं(87) और** (जिस तरह अल्लाह तआ़ला को क़ियामत की ख़बर है उसी तरह) **उस को पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **के इस कहने की भी ख़बर है कि या रब मेरे ये लोग ऐसे हैं कि** (मेरे इतना समझाने पर भी) **ईमान नहीं लाते** (इससे सज़ा की सख़्ती

और बढ़ गई बस समझ लेना चाहिए कैसा सख़्त अज़ाब होगा)(88) **तो** (जब आप को मालूम हो गया कि उनका अन्जाम यह होने वाला है तो) **आप उनसे बेपरवाह रहिए** (यानी उनके ईमान की ऐसी उम्मीद न रखिए जो बाद में दुख हो) **और** (अगर वो आप से मुख़ालफ़त और जहालत की बात करें तो आप बुराई दूर करने के लिए) **यह कह दीजिए कि तुम को सलाम करता** (हूं और कुछ नहीं कहता और न कुछ वास्ता रखता) **हूं,** (और आप कुछ दिनों सब्र कीजिए) **सो उन को अभी** (मरते ही) **पता चल जाएगा**(89)।

नोटः- यहां सलाम से मुराद ख़ूबसूरती के साथ अलग हो जाना है। इस आयत को दलील बनाकर काफ़िरों को सलाम जाइज़ ठहराना दुरूस्त नहीं। (रूहुल मआनी)

44-सूरत-दुख़ान

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '59' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿٤﴾
اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٥﴾ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦﴾ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَ
مَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٧﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾ بَلْ هُمْ فِيْ
شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ﴿٩﴾

आयत नं० 01 से 09

हामीम (इसका मतलब तो अल्लाह को मालूम है)(01) **क़सम है इस साफ़** (साफ़ मतलब बयान करने वाली) **किताब की(02) कि हमने इस को** (लोहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर) **एक बरकत वाली रात** (याने शबे क़द्र) **में उतारा है** (क्योंकि) **हम** (महरबानी की वजह से अपने बन्दों को) **ख़बरदार करने वाले थे** (यानी हमने यह चाहा कि उनको नुक़सान से बचाने के लिए भलाई-बुराई पर ख़बरदार करें इसलिए क़ुरआन को उतारा गया)(03) **इस रात में हर हिकमत वाला मुआमला तय किया जाता है(04) हमारे हुक्म से** (यानी साल भर के सारे काम जिस तरह हम चाहते हैं तय करके फ़रिशतों के सुपुर्द कर दिये जाते हैं, और यह क़ुरआन इसलिए उतारा गया कि) **हम आप को पैग़म्बर बनाने वाले थे(05) उस महरबानी की वजह से जो आप के रब की तरफ़ से है** (ताकि आप के वास्ते से अपने बन्दों को ख़बरदार करें), **बेशक वो बड़ा सुनने वाला बड़ा जानने वाला** (है इसलिए बन्दों का ध्यान रखता) **है(06)** (और वो ऐसा है) **जो कि मालिक है आसमानों और ज़मीन का और जो** (मख़्लूक़) **इन दोनों के बीच में है उसका भी, अगर आप यक़ीन लाना चाहते** (हैं तो ये तौहीद की दलीलें यक़ीन लाने के लिए काफ़ी) **हैं(07) उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं वो ही ज़िन्दगी देता है और वो ही मौत देता है, वो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे पहले गुज़रे हुए बाप दादों का भी रब है(08)** (और चाहिए तो यह था कि वो लोग मान लेते मगर

ये लोग फिर भी नहीं मानते) **बल्कि वो** (तौहीद की तरफ़ से) **शक में** (पड़े) **हैं** (और दुनिया के) **खेल** (कूद) **में लगे हुए हैं** (आख़रत की फ़िक्र नहीं जो सच्चे दीन को तलाश करें इस बारे में सोचें)(09)।

नोटः- एक हदीस में है कि ''जो आदमी जुमा की रात में सूरत दुख़ान पढ़ले तो सुबह को उसके गुनाह मुआफ़ हो चुके होंगे''।

और एक हदीस में है कि ''जिस आदमी ने जुमा की रात या दिन में सूरत दुख़ान पढ़ ली अल्लाह तआ़ला उसके लिए जन्नत में घर बनाएंगे''। (क़ुरतबी)

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ﴿١٠﴾ يَّغْشَى النَّاسَ ۖ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١﴾ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ
اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَ قَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَ قَالُوْا مُعَلَّمٌ
مَّجْنُوْنٌ ﴿١٤﴾ اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ﴿١٥﴾ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ﴿١٦﴾

आयत नं० 10 से 16

(और जब ये लोग सच्चाई साबित हो जाने के बाद भी नहीं मानते) **तो आप** (उनके लिए) **उस दिन का इन्तिज़ार कीजिए कि आसमान की तरफ़ एक दिखाई देने वाला धुंआ पैदा हो**(10) **जो इन सब लोगों पर छाजाए, यह** (भी) **एक दर्दनाक सज़ा** (है जो उनको होगी इससे मुराद अनाज का अकाल है जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बददुआ से एक बार मक्के में और एक बार मदीने में हुआ और भूक की सख़्ती में आसमान ज़मीन के बीच आंखों के सामने धुंआ सा दिखाई देता) **है**(11) (उस वक़्त ये लोग कहेंगे कि) **या रब हमारे हम से इस मुसीबत को दूर कर दीजिए हम ज़रूर ईमान ले आएंगे**(12) (मगर ये वादा सच्चे दिल से नहीं करते क्योंकि) **उन को** (इससे) **कब नसीहत होती है** (जिससे उनके ईमान की उम्मीद की जाए) **हालांकि** (इससे पहले) **उनके पास साफ़-साफ़ बयान करने वाला पैग़म्बर आया**(13) **फिर भी ये लोग उससे मुंह फेरे रहे और ये ही कहते रहे कि** (किसी दूसरे इन्सान का) **सिखाया हुआ है** (और) **दीवाना** (है बस जब इतने बड़े पैग़म्बर के आने पर जिसकी पैग़म्बरी दलीलों से साबित है ये लोग ईमान नहीं लाए तो अकाल दूर होने पर इन से ईमान लाने की कब उम्मीद) **है**(14) (मगर) **हम** (दलील पूरी करने के लिए अच्छा) **कुछ**

दिनों के लिए उस अज़ाब को हटा देंगे (मगर) **तुम फिर अपनी उसी** (पहली) **हालत पर आजाओगे** (जैसा कि ऐसा ही हुआ भी)(15) **बेशक** (इस अज़ाब के टलने की मुद्दत सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी तक है फिर मरने के बाद जो मुसीबत आएगी उसका कही ख़ात्मा नहीं बस) **जिस दिन हम बड़ी सख़्त पकड़ पकड़ेंगे** (उस दिन) **हम** (पूरा) **बदला लेंगे** (यानी आख़रत में पूरी सज़ा होगी)(16)

नोटः- कुछ सहाबा ने दुख़ान (धुएं) को क़ियामत की निशानियों में से बताया है।

وَ لَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ﴿۱۷﴾ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ
اَمِيْنٌ ﴿۱۸﴾ وَّ اَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۹﴾ وَ اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَ رَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿۲۰﴾ وَ
اِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿۲۱﴾ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿۲۲﴾ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ
مُّتَّبَعُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَ اتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿۲۴﴾ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ﴿۲۵﴾ وَّ زُرُوْعٍ وَّ مَقَامٍ
كَرِيْمٍ ﴿۲۶﴾ وَّ نَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿۲۷﴾ كَذٰلِكَ ۫ وَ اَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۲۸﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَ
الْاَرْضُ وَ مَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَ لَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿۳۰﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَ لَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۲﴾ وَ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿۳۳﴾

आयत नं० 17 से 33

और हमने इन से पहले फ़िरऔन की क़ौम को आज़माया था और (वो आज़माना यह था कि कौन ईमान लाता है और कौन नहीं लाता इसलिए) **उनके पास एक इज़्ज़तदार पैग़म्बर** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम) **आए थे**(17) (और उन्होंने आकर फ़िरऔन और फ़िरऔन की क़ौम से कहा) **कि इन अल्लाह के बन्दों** (यानी बनी इस्राईल) **को** (जिन को तुम तरह-तरह से सता रहे हो) **मेरे हवाले कर दो** (और उनसे अलग हो जाओ कि मैं जहां और जिस तरह ठीक हो इन को आज़ाद करके रक्खूं)**, मैं तुम्हारी तरफ़** (अल्लाह का) **एक अमानतदार पैग़म्बर** (बनकर आया हूं बस तुम को मेरी बात मानना चाहिए क्योंकि मैं कोई बात वही से घटाता बढ़ाता नहीं जो हुक्म होता है पहुंचाता) **हूं**(18) **और यह** (भी कहा) **कि तुम अल्लाह से सरकशी मत करो मैं तुम्हारे सामने एक खुली हुई दलील** (अपनी पैग़म्बरी की) **पेश करता हूं** (यानी असा और चमकते हाथ का मोजिज़ा)(19) **और** (जब फ़िरऔन और फ़िरऔन वालों ने न माना बल्कि आपस में क़त्ल का मशवरा हुआ उस वक़्त आप ने

सुन कर कहा कि) **मैं अपने रब और तुम्हारे रब की पनाह लेता हूं इससे कि तुम लोग मुझ को पत्थर बरसा कर क़त्ल करो**(20) **और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझ से अलग ही रहो** (यानी मुझ को तकलीफ़ मत पहुंचाओ क्योंकि मुझको तो कोई नुक़सान न पहुंचेगा यह मुझ से अल्लाह का वादा है लेकिन तुम्हारा जुर्म और बढ़ जाएगा मगर वो कब मानने वाले थे)(21) **तब मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने रब से दुआ की कि ये बड़े सख़्त मुजरिम लोग हैं** (कि जुर्मों से बाज़ नहीं आते अब इनका फ़ैसला कर दीजिए कहा कि हमने दुआ क़ुबूल की और उनके फ़ैसले का वक़्त आगया)(22) **तो** (कहा गया कि) **अब मेरे बन्दो** (यानी बनी इस्राईल) **को तुम रात ही रात में लेकर चले जाओ** (क्योंकि) **तुम लोगों का** (फ़िरऔन की तरफ़ से) **पीछा** (भी) **किया जाएगा** (इसलिए रात में निकल जाने से इतनी दूर तो निकल जाओगे कि ये पीछा करके तुम को पकड़ न सकें)(23) **और** (रास्ते में जो दरिया बीच में आएगा) **तुम उस दरिया को** (पहले असा मारना कि वो सूख कर रास्ता देदेगा फिर पार होने के बाद यह फ़िक्र न करना कि शायद फ़िरऔन भी इसी तरह पार हो जाएगा बल्कि तुम उसको उसी तरह) **ठहरा हुआ छोड़ देना,** (क्योंकि इसमें यह हिकमत है कि) **उन** (फ़िरऔनियों) **की सारी फ़ौज** (उस दरिया में) **डुबोई जाएगी** (इस तरह कि वो उसमें धुसेंगे और जब उसमें आजाएंगे तो चारों तरफ़ से पानी आ मिलेगा बस ऐसा ही हुआ कि मूसा अलैहिस्सलाम पार हो गये और फ़िरऔनी डूब गये)(24) **वो लोग छोड़ गये कितने ही बाग़ और** (कितनी ही) **नहरें**(25) **और** (कितनी ही) **खेतियां और** (कितने ही) **शानदार मकान**(26) **और** (कितने ही) **आराम के सामान जिनमें वो ख़ुश रहा करते थे** (छोड़ गये)(27) **इसी तरह** (हुआ यह क़िस्सा) **और हमने एक दूसरी क़ौम** (यानी बनी इस्राईल) **को उन का मालिक बना दिया**(28) **सो** (क्योंकि वो बहुत ही बुरे थे और नफ़रत के क़ाबिल थे इसलिए) **न तो उन पर आसमान और ज़मीन को रोना आया और न उनको** (अज़ाब से कुछ और) **मुहलत दी गई** (यानी अगर कुछ और जीते तो जहन्नम के अज़ाब से कुछ और दिन बचे रहते)(29) **और हमने** (इस तरह) **बनी इस्राईल को रूसवाई के अज़ाब से बचा लिया**(30) **यानी फ़िरऔन** (के ज़ुल्म व सितम) **से** (बचा लिया)**, सचमुच वो** (फ़िरऔन) **बड़ा सरकश** (और बन्दगी की) **हद से निकल जाने वालों में से था** (एक नेमत तो बनी इस्राईल पर यह हुई)(31) **और** (इसके अलावा) **हमने बनी इस्राईल को** (और भी नेमतें देकर) **अपने इल्म** (और हिकमत) **की रू से** (कुछ बातों में सभी) **दुनिया जहान वालों पर** (या सभी बातों में उस ज़माने के लोगों पर) **बड़ाई दी**(32) **और हमने उन को** (अपनी क़ुदरत की) **ऐसी** (बड़ी-बड़ी) **निशानियां दीं जिनमें खुला इनआम** (पाया जाता) **था** (यानी जो नेमतें उनको दी गईं वो क़ुदरत की

दलील भी थी जैसे फ़िरऔन से बचाना और किताबें और मोजिज़े)(33)।

नोटः- हज़रत अली रज़ि० का बयान है कि नेक आदमी के मरने पर ज़मीन व आसमान रोते हैं।
(इब्ने कसीर)

إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ لَيَقُولُونَ ۝٣٤ إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا ٱلْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ۝٣٥ فَأْتُوا۟ بِـَٔابَآئِنَآ إِن كُنتُمْ
صَٰدِقِينَ ۝٣٦ أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَٰهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ مُجْرِمِينَ ۝٣٧ وَمَا
خَلَقْنَا ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَٰعِبِينَ ۝٣٨ مَا خَلَقْنَٰهُمَآ إِلَّا بِٱلْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝٣٩ إِنَّ يَوْمَ
ٱلْفَصْلِ مِيقَٰتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝٤٠ يَوْمَ لَا يُغْنِى مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْـًٔا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝٤١ إِلَّا مَن رَّحِمَ ٱللَّهُ ۚ
إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ۝٤٢

आयत नं० 34 से 42

ये लोग (क़ियामत की सख़्ती की ख़बरें सुन कर क़ियामत का इनकार करते हैं और) **कहते हैं** (34) **कि आख़री हालत बस ये ही हमारा दुनिया का मरना है और हम दोबारा ज़िन्दा न होंगे** (यानी आख़रत की ज़िन्दगी का इनकार करते हैं)(35) **सो** (ऐ मुसलमानो) **अगर तुम** (आख़रत के दावे में) **सच्चे हो तो** (इन्तिज़ार कौन करे अभी) **हमारे बाप दादों को** (ज़िन्दा करके) **ला मौजूद करो** (36) (आगे इन की कुफ़्र की बातों पर डराया गया है कि इन को ज़रा सोचना चाहिए कि) **ये लोग** (ताक़त व ज़ोर में) **ज़्यादा बढ़े हुए हैं या** (यमन के बादशाह) **तुब्बा की क़ौम और जो क़ौमें उन से पहले हो चुकी हैं** (जैसे आद व समूद यानी ये क़ौमें ज़्यादा बढ़ी हुई थीं, मगर) **हमने उन को** (भी) **हलाक कर दिया** (सिर्फ़ इसलिए कि) **वो मुजरिम लोग थे** (तो ये लोग अगर शरारतों से बाज़ न आएंगे तो ये क्योंकर अपने को बचा लेंगे)(37) **और** (आगे क़ियामत की सच्चाई और हिकमत का बयान है कि) **हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच में है उस को बेफ़ाइदा** (खेल तमाशे के लिए) **पैदा नहीं किया**(38) (बल्कि) **हमने उन दोनों को** (उन की दूसरी मख़लूक़ों समीत) **किसी हिकमत** (और ख़ास मतलब) **ही से बनाया है** (जैसे अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत की दलील होना) **लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते** (कि जो हस्ती इतनी बड़ी चीज़ों को शुरू में पैदा करने की क़ुदरत रखती है वो उन को दोबारा पैदा करने पर भी क़ुदरत रखती है)(39) **बेशक फ़ैसले का दिन** (यानी क़ियामत का दिन) **इन सब** (के दो बारा ज़िन्दा होने और इनआम व सज़ा

मिलने) **का तय वक़्त है** (जो अपने वक़्त पर ज़रूर होगा)(40) **जिस दिन कोई ताल्लुक़ वाला किसी ताल्लुक़ वाले के ज़रा काम न आएगा और न** (ही किसी की तरफ़ से जैसे उनके बनाए हुए ख़ुदाओं की तरफ़ से) **उन की कुछ मदद की जाएगी**(41) **हां मगर जिस पर अल्लाह रहम करे** (कि रहमत से उसके हक़ में अल्लाह की इजाज़त से की गई सिफ़ारिश काम आएगी और अल्लाह उसका मददगार होगा), **वो** (अल्लाह) **ज़बरदस्त** (ताक़त वाला) **है** (काफ़िरों से बदला लेगा) **महरबान है** (मुसलमानों पर रहम करेगा)(42)

اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الْاَثِيْمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى
سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٨﴾ ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿٤٩﴾ اِنَّ هٰذَا مَا
كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ﴿٥١﴾ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ﴿٥٢﴾ يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّ
اِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٥٣﴾ كَذٰلِكَ ۟ وَ زَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ لَا
يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَ وَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٥٦﴾ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿٥٧﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

आयत नं० 43 से 59

बेशक ज़क़्क़ूम (नाम) **का पेड़**(43) **बड़े मुजरिम** (यानी काफ़िर) **का खाना होगा**(44) (देखने में) **तेल की तिलछट जैसा होगा** (और) **वो पेट में** (ऐसा) **जोश मारेगा**(45) **जैसे तेज़ गर्म पानी खौलता है**(46) (और फ़रिशतों को हुक्म होगा कि) **इसको पकड़ो घसीटते हुए दोज़ख़ के बीचो बीच तक ले जाओ**(47) **फिर उसके सर के ऊपर तकलीफ़ देने वाला गर्म पानी छोड़ दो**(48) (और उससे हंसी उड़ाते हुए कहा जाएगा कि) **ले चख! तू बड़ा इज़्ज़तदार ज़ोर आवर है**(49) (और दोज़ख़ियों से कहा जाएगा कि) **यह वो चीज़ है जिसमें तुम शक** (व इनकार) **किया करते थे**(50) (आगे ईमान वालों का ज़िक्र है कि) **बेशक अल्लाह से डरने वाले अमन** (चैन) **की जगह में होंगे**(51) **यानी बाग़ों में और नहरों में**(52) (और) **वो सुन्दुस व इस्तबरक़** (यानी दोनों क़िस्म की रेशम) **का लिबास पहने हुए आमने सामने बैठे होंगे**(53) (और यह बात) **इसी तरह है और हम उन की गोरी-गोरी बड़ी आंखों वाली** (यानी बहुत ख़ूबसूरत) **हूरों से शादी कर देंगे**(54) (और) **वहां तसल्ली से हर क़िस्म के फल मंगाते होंगे**(55) (और) **वहां वो सिवाए उस मौत के**

जो दुनिया में आ चुकी थी और मौत का मज़ा न चक्खेंगे (यानी मरेंगे नहीं) **और अल्लाह तआ़ला उन को दोज़ख़** (के अज़ाब) **से** (भी) **बचा लेगा**(56) (और) **यह सब कुछ आप के रब की महरबानी से होगा, बड़ी कामयाबी ये ही है**(57) (और ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप का काम इतना है कि आप इनको कहते रहिए) **सो** (इसी वास्ते) **हमने इस कुरआन को आप की ज़बान** (अरबी) **में आसान कर दिया ताकि ये** (इसको समझ कर इससे) **नसीहत पाएं**(58) **तो** (अगर ये लोग न मानें तो) **आप** (इन पर मुसीबतों के आने का) **इन्तिज़ार कीजिए ये लोग भी** (आप पर मुसीबतें आने का) **इन्तिज़ार कर रहे हैं** (बस आप तबलीग़ से ज़्यादा फ़िक्र में न पड़िए न मुख़ालफ़त पर दुख कीजिए, उन का मुआमला अल्लाह के सुपुर्द करके सब्र कीजिए वो ख़ुद समझ लेगा)(59)।

नोटः- आख़रत की ज़िन्दगी के बाद कभी मौत नहीं आएगी तो जन्नती लोगों के लिए यह ख़ुशी की ख़बर होगी मगर दोज़ख़ी लोगों के लिए तकलीफ़ की क्योंकि वो तो वहां मौत की तमन्ना करेंगे।

45-सूरत-जासिया

इस मक्की सूरत में '4' रूकू और '37' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

حٰمٓ ۚ﴿۱﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿۲﴾ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۳﴾ؕ وَ فِيْ
خَلْقِكُمْ وَ مَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۴﴾ۙ وَ اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ
مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۵﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا
عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَ اٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۶﴾ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿۷﴾ۙ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى
عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۸﴾ وَ اِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْئَا اِۨتَّخَذَهَا
هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۹﴾ؕ مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْئًا وَّ لَا مَا اتَّخَذُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۰﴾ؕ هٰذَا هُدًى ۚ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ
رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ﴿۱۱﴾ع

आयत नं० 01 से 11

हामीम (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है)(01) **यह अल्लाह की तरफ़ से उतारी हुई किताब है जो ज़बरदस्त** (कुदरत वाला और) **हिकमत वाला है** (और जब यह ऐसी किताब है तो इसकी बातों को ध्यान से सुनना चाहिए)(02) **बेशक आसमानों और ज़मीन में ईमान वालों के लिए** (कुदरत और तौहीद की) **बहुत सी दलीलें हैं(03) और** (इसी तरह) **खुद तुम्हारे और उन जानवरों के पैदा करने में जिन को** (ज़मीन पर) **फैला रक्खा है** (कुदरत व तौहीद की) **दलीलें हैं उन लोगों के** (समझाने के) **लिए जो यक़ीन रखते हैं(04) और** (इसी तरह) **रात और दिन के आने जाने में और** (इसी तरह) **उस रोज़ी** (के सामान) **में जिस को अल्लाह तआ़ला ने आसमान से उतारा** (यानी बारिश) **फिर उस** (बारिश) **से ज़मीन को हरा भरा किया उसके सूख जाने के बाद और** (इसी तरह) **हवाओं के बदलने में** (कि कभी परवा है कभी पछवा कभी गर्म कभी ठन्डी यानी

इन सब चीज़ों में क़ुदरत व तौहीद की) **दलीलें** (मौजूदा) **हैं उन लोगों के लिए जो समझ से काम लेते हैं(05) ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम आप को सही-सही पढ़ कर सुनाते हैं** (जिससे पैग़म्बरी साबित है लेकिन इतनी बड़ी दलील के बावजूद भी अगर ये लोग नहीं मानते) **तो फिर अल्लाह और उस की** (ऐसी) **आयतों के बाद और कौन सी बात** (इससे बढ़ कर होगी जिस) **पर ये लोग ईमान लाएंगे(06)** (आगे आख़रत का बयान है कि) **बड़ी ख़राबी होगी हर ऐसे आदमी के लिए जो** (अक़ीदे की बातों में) **झूटा हो** (और करतूतों से) **गुनाहगार हो(07) जो** (इसके बावजूद कि) **अललाह की आयतों को सुनता** (भी) **है जब कि वो उसके सामने पढ़ी जाती हैं** (और) **फिर भी वो घमन्ड करता हुआ** (अपने कुफ़्र पर) **इस तरह डटा रहता है जैसे उस ने उन** (आयतों) **को सुना ही नहीं सो ऐसे आदमी को एक दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दीजिए(08) और** (ऐसे आदमी की शरारत का यह हाल है कि) **जब वो हमारी आयतों में से किसी आयत की ख़बर पाता है तो उस की हंसी उड़ाता है, ऐसे लोगों के लिए** (आख़रत में) **रूसवा करने वाला अज़ाब** (होने वाला) **है(09)** (यानी) **उनके आगे जहन्नम** (आ रही) **है और** (उस वक़्त) **न तो उनके वो चीज़ें ज़रा काम आएंगी जो** (दुनिया में) **कमा गये थे** (उसमें माल और किये काम सब आगये) **और न वो** (काम आएंगे) **जिन को उन्होंने अल्लाह के सिवा रखवाला** (और माबूद) **बना रक्खा था और उनके लिए बड़ा अज़ाब होगा(10)** (क्योंकि) **यह क़ुरआन सारा का सारा हिदायत** (और मानने क़ाबिल) **है और** (फिर भी) **जो लोग अपने रब की** (इन) **आयतों को नहीं मानते उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अज़ाब होगा(11)**

اَللّٰهُ الَّذِیْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِیَ الْفُلْكُ فِیْهِ بِاَمْرِهٖ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۚ﴿۱۲﴾ وَ سَخَّرَ
لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ قُلْ لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا
یَغْفِرُوْا لِلَّذِیْنَ لَا یَرْجُوْنَ اَیَّامَ اللّٰهِ لِیَجْزِیَ قَوْمًۢا بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ
اَسَآءَ فَعَلَیْهَا ؗ ثُمَّ اِلٰی رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۵﴾

आयत नं० 12 से 15

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे (फ़ाइदे के) **लिए समन्दर को काम में लगा दिया है कि उसके हुक्म से इसमें कशतियां चलें और ताकि** (उन कशतियों में सफ़र करके) **तुम उसकी रोज़ी**

तलाश करो और ताकि (वो रोज़ी पाकर) **तुम शुक्र करो**(12) **और** (इसी तरह) **जितनी चीज़ें आसमानों में हैं और जितनी चीज़ें ज़मीन में हैं उन सब को अपनी तरफ़ से** (यानी अपने हुक्म और महरबानी से) **तुम्हारे काम में लगा रक्खा है, बेशक इन बातों में उन लोगों के लिए** (कुदरत की) **दलीलें हैं जो सोच समझ से काम लेते हैं**(13) (और काफ़िरों की शरारतों पर कभी-कभी मुसलमानों को गुस्सा आजाया करता था इसलिए उन को सहार से काम लेने का हुक्म है कि) **आप ईमान वालों से कह दीजिए कि उन लोगों को मुआफ़ करें जो अल्लाह तआ़ला के मुआमलों** (यानी आख़रत की सज़ा व सवाब) **का यक़ीन नहीं रखते ताकि अल्लाह तआ़ला एक क़ौम को** (यानी मुसलमानों को) **उनके** (इस नेक) **काम का** (अच्छा) **बदला दे**(14) (क्योंकि वहां का क़ानून यह है कि) **जो आदमी नेक काम करता है सो अपने ही फ़ाइदे** (व सवाब) **के लिए** (करता है), **और जो आदमी बुरा काम करता है वो अपना ही नुक़सान करता है, फिर** (सब अच्छे व बुरे काम करने के बाद) **तुम को अपने रब के पास लौट कर जाना** (है बस वहां तुम को तुम्हारे अच्छे काम व बरताव का अच्छा बदला और तुम्हारे मुख़ालिफ़ों को उनके कुफ़्र व गुनाह पर सख़्त सज़ा दी जाएगी इसलिए तुम्हारे लिए यहां मुआफ़ कर देना ही बेहतर) **है**(15)

नोटः- समन्दर को काम में लगाने से इस तरफ़ भी इशारा पाया जाता है कि समन्दर में इन्सानों के काम की बहुत सी चीज़ें पाई जाती हैं। और आज साइंसदां बहुत से ख़ज़ाने समन्दर से निकल रहे हैं जैसे पैट्रोलियम और बहुत सी कानें।

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ وَ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَ فَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ وَ
اٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ
بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَ لَا تَتَّبِعْ
اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَ
اللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

आयत नं० 16 से 20

और (पैग़म्बरी कोई अनोखी चीज़ नहीं जो उस का इनकार किया जाए जैसा कि इससे पहले) **हमने बनी इस्राईल को** (आसमानी) **किताब और हिकमत** (यानी हुक्मों का इल्म) **और पैग़म्बरी दी**

थी (यानी उनमें पैग़म्बर पैदा किये थे) **और हमने उनको पाकीज़ा चीज़ें खाने को दी थी** (जैसा कि मन्ना सलवा और मुल्क शाम का मालिक बनाया) **और हमने** (कुछ बातों में जैसे दरिया में रास्ता देना बादल का साया कर देना वग़ैरह) **उनको दुनिया जहान वालों पर बड़ाई दी(16) और हमने उनको दीन के बारे में खुली-खुली दलीलें दीं** (यानी उनको बड़े साफ़ मोजिज़े दिखाए) **सो** (चाहिए तो यह था कि ख़ूब ताबेदारी करते मगर) **उन्होंने इल्म आने के बाद ही आपस में फूट डाली आपस की ज़िद्दा ज़िद्दी की वजह से** (मतलब यही कि जिस इल्म की वजह से फूट ख़त्म होनी चाहिए थी उन्होंने उससे ही आपस में फूट डाली)**, आप का रब उनके आपस में क़ियामत के दिन उन बातों में** (खुला) **फ़ैसला कर देगा जिन में आपस में झगड़ते** (और बहसते) **थे(17) फिर** (बनी इस्राईल में पैग़म्बरी का दौर ख़त्म होने के बाद) **हमने आप को** (पैग़म्बरी दी और आप को) **दीन के एक ख़ास तरीक़े पर कर दिया सो आप उसी तरीक़े पर चले जाइये** (यानी अमल में भी और तबलीग़ में भी) **और इन जाहिलों की मर्ज़ी पर न चलिए** (यानी उन की मर्ज़ी तो यह है कि आप तबलीग़ छोड़ दें और इसलिए ये तरह-तरह से परीशान करते हैं ताकि आप तंग होकर तबलीग़ छोड़ दें)(18) **और ये लोग अल्लाह के मुक़ाबिले में आप के ज़रा काम नहीं आ सकते** (बस उनका कहना न होने पाए)**, और ज़ालिम लोग एक दूसरे के दोस्त होते हैं** (और एक दूसरे का कहना मानते हैं) **और अल्लाह दोस्त है परहेज़गारों का** (और परहेज़गार उसका कहना माना करते हैं और आप परहेज़गारों के सरदार हैं)(19) **यह क़ुरआन** (जो आप को मिला है यह) **आम लोगों के लिए नसीहत और हिदायत का सामान है और यक़ीन** (यानी ईमान) **लाने वालों के लिए बड़ी रहमत** (का सामान) **है(20)।**

नोटः- ऊपर आयत से यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को ही मानना और उस पर चलना वाजिब है। पहली शरीअतों के हुक्म को उस वक़्त तक नहीं माना जा सकता जब तक क़ुरआन व सुन्नत से वो साबित न होजाए।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَ
مَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝٢١ وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ وَ
هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٢٢

आयत नं० 21 से 22

ये (क़ियामत का इनकार करने वाले) **लोग जो बुरे-बुरे काम** (कुफ़्र व शिर्क व ज़ुल्म व गुनाह) **करते** (रहते) **हैं क्या यह समझते हैं कि हम उन को उन लोगों के बराबर रक्खेंगे जो ईमान लाए और नेक काम किये हैं कि उन सब का जीना और मरना बराबर हो जाए** (यानी मोमिन लोग जिस तरह दुनिया में मज़े न उठा सके इसी तरह मौत के बाद भी आराम न पाएं और काफ़िर लोग जैसे इस ज़िन्दगी में अज़ाब और तकलीफ़ों से बचे रहे इसी तरह मरने के बाद भी अज़ाब से बचे रहें तो आख़रत के इनकार का मतलब यह है कि नेकों को कहीं नेकी का फल न मिले और बुरों को कभी बुराई की सज़ा न मिले), **ये ग़लत बात कहते हैं(21) और अल्लाह तआला ने आसमान और ज़मीन को हिकमत के साथ पैदा किया** (यानी इनका पैदा करना बेमतलब नहीं एक हिकमत तो यह है कि जो इतनी बड़ी चीज़ों को पहली बार पैदा कर सकता है उसके लिए दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है इससे क़ियामत व आख़रत का वजूद साबित होता है) **और** (दूसरी हिकमत यह है कि) **ताकि हर आदमी को उसके किये का बदला दिया जाए** (और यह सब जानते हैं कि दुनिया में पूरा बदला है नहीं इसलिए आख़रत का होना ज़रूरी हो गया) **और** (इस बदले में) **उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा(22)**

नोटः- बता दिया गया कि इस दुनिया को अल्लाह तआला ने इम्तिहान के लिए बनाया है कि कौन कैसे काम करता है, यह फल मिलने की जगह नहीं फल मिलने की जगह आख़रत है कि अच्छे कामों का अच्छा अन्जाम बुरे कामों का बुरा अन्जाम।

اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَ اَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّ خَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَ قَلْبِهٖ وَ جَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ
غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَ قَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَ نَحْيَا وَ مَا
يُهْلِكُنَاۤ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا
كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۵﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ
يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾

आयत नं० 23 से 26

सो क्या (तौहीद व आख़रत के इन साफ़ बयानों के बाद) **आपने उस आदमी की हालत भी देखी जिसने अपना ख़ुदा अपने मन की चाहतों को बना रक्खा है** (कि जो दिल में आता है उसी के पीछे चलता रहता है) **और अल्लाह तआ़ला ने उस को समझबूझ के बावजूद गुमराह कर दिया है** (कि हक़ को सुना और समझा भी मगर मनमर्ज़ी पर चलकर गुमराह होगया) **और** (अल्लाह तआ़ला ने) **उसके कान और दिल पर बन्द लगा दिया है और उसकी आंख पर पर्दा डाल दिया है** (कि मनमर्ज़ी पर चलने में समझ जाती रही), **सो ऐसे आदमी को अल्लाह के** (गुमराह कर देने के) **बाद कौन राह पर लाए,** (आगे इनकार करने वालों को कहा गया कि) **क्या तुम** (इन बातों को सुन कर) **फिर भी नहीं समझते** (यानी ऐसा समझना जिससे नफ़ा हो)(23) **और ये** (क़ियामत का इनकार करने वाले) **लोग यह कहते हैं कि सिवाए हमारी इस दुनिया की ज़िन्दगी के और कोई ज़िन्दगी** (आख़रत में) **नहीं है हम** (ये ही एक मरना) **मरते हैं और** (ये ही एक जीना) **जीते हैं** (मतलब यह कि मौत की तरह ज़िन्दगी भी दुनिया ही में है) **और हम को सिर्फ़ ज़माने** (के चक्कर) **से मौत आ जाती है** (मतलब यह कि ज़माना गुज़रने के साथ-साथ बदन की ताक़त ख़र्च होती रहती है और धीरे-धीरे घटते-घटते मौत आ जाती है यानी आख़रत की ज़िन्दगी नहीं होगी) **और इन लोगों के पास इस पर कोई दलील नहीं है सिर्फ अटकली बात कर रहे हैं** (यानी आख़रत की ज़िन्दगी के इनकार पर कोई दलील नहीं)(24) **और** (न सच्चे दीन वालों की दलील का वो कुछ जवाब दे सकते हैं बस) **जिस वक़्त** (इस बारे में) **उनके सामने हमारी साफ़ आयतें पढ़ी जाती हैं** (जो बात साबित करने के लिए काफ़ी हैं) **तो उनका** (इस पर) **सिवाए इसके और कोई जवाब नहीं होता कि कहते हैं कि हमारे बाप दादों को** (ज़िन्दा करके) **सामने लाओ अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो**(25) **आप** (उनके जवाब में) **यह कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला तुम को** (जब तक चाहता है) **ज़िन्दा रखता है फिर** (जब चाहेगा) **तुम को मौत देगा फिर क़ियामत के दिन जिस** (के आने) **में ज़रा शक नहीं तुम को** (ज़िन्दा करके) **जमा करेगा** (बस दावा उस दिन में ज़िन्दा करने का है और दुनिया में मुर्दों को ज़िन्दा न करने से उस दिन में ज़िन्दा करने का इनकार साबित नहीं होता) **लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते** (और बिना दलील सच्चाई का इनकार करते हैं)(26)।

नोटः- हदीसों में आया है कि ज़माने को बुरा न कहो इसलिए कि जो कुछ भी होता है वो अल्लाह के हुक्म ही से होता है। (मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ۝٢٧ وَ تَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ
جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰۤى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٢٨ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ
بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٢٩ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ
رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝٣٠ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَ كُنْتُمْ
قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝٣١ وَ اِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ السَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ
نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّ مَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ۝٣٢ وَ بَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٣٣ وَ قِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ
نّٰصِرِيْنَ ۝٣٤ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَ
لَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝٣٥ فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ رَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٦ وَ لَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِی السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۪ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣٧

आयत नं० 27 से 37

और (ऊपर जो कहा गया है कि अल्लाह तुम को महशर में जमा करेगा तो इसको कुछ मुश्किल न समझा जाए क्योंकि) **अल्लाह ही का राज है आसमानों में और ज़मीन में** (वो जो चाहे करे बस तुम्हें मौत के बाद ज़िन्दा करके जमा करना भी उसके लिए कोई मुश्किल नहीं)**, और जिस दिन क़ियामत आएगी उस दिन झूटे** (यानी सच्चे दीन को न मानने वाले) **नुक़सान उठाएंगे(27) और आप** (उस दिन) **हर फ़िरक़े को देखोगे कि** (डर की वजह से) **घुटनों के बल गिरा हुआ है, हर फ़िरक़ा अपने आमाल नामे** (में लिखे हुए कामों के हिसाब) **की तरफ़ बुलाया जाएगा,** (और उनसे कहा जाएगा) **आज तुम को तुम्हारे किये का बदला मिलेगा(28)** (और कहा जाएगा कि) **यह** (आमाल नामा) **हमारा** (लिखाया हुआ) **रजिस्टर है जो तुम्हारे बारे में ठीक-ठीक बोल रहा** (है यानी तुम्हारे किये कामों को दिखा रहा) **है,** (और) **हम** (दुनिया में) **तुम्हारे** (सब) **कामों को** (फ़रिशतों से) **लिखवाते जाते थे** (और यह उन्हीं का रजिस्टर है)**(29) सो** (हिसाब के बाद फ़ैसला यह होगा कि) **जो लोग ईमान लाए थे और उन्होंने अच्छे काम किये थे तो उनको उनका रब अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, और यह खुली हुई कामयाबी है(30) और जो लोग काफ़िर थे** (उन से कहा

जाएगा कि) **क्या मेरी आयतें तुम को पढ़ कर नहीं सुनाई जाती थी सो तुमने** (उनके मानने से) **घमन्ड किया था और** (इस वजह से) **तुम बड़े मुजरिम थे(31) और** (तुम्हारा यह हाल था कि) **जब** (तुम से) **कहा जाता था कि अल्लाह का वादा** (दोबारा ज़िन्दा करके सज़ा व बदला देने का) **सच है और क़ियामत में कोई शक नहीं है तो तुम** (बहुत बेपरवाई से) **कहा करते थे कि हम नहीं जानते क़ियामत क्या चीज़ है** (बस सुनने सुनाने से) **सिर्फ़ एक ख़्याल सा तो हम को भी होता है और हम को** (उसका) **यक़ीन नहीं(32) और** (उस वक़्त) **उनके सभी कामों की बुराइयां खुल कर सामने आजाएंगी और जिस** (अज़ाब) **का वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे वो उनको आघेरेगा(33) और** (उन से) **कहा जाएगा कि आज हम तुम को भुलाए देते हैं** (यानी रहमत से दूर किये देते हैं जिस को भुलाना कहा गया) **जैसा तुमने अपने इस दिन के आने को भुला रक्खा था और** (आज से) **तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं(34) यह** (सज़ा) **इस वजह से है कि तुमने अल्लाह तआ़ला की आयतों की हंसी उड़ाई थी और तुम को दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल रक्खा था** (कि उस में लग कर आख़रत से बिल्कुल बेपरवाह बल्कि इनकारी हो गये थे)**, सो आज ये लोग न तो दोज़ख़ से निकाले जाएंगे और न उनसे मुआफ़ी मांगने को कहा** (जाएगा यानी तौबा करके अल्लाह को राज़ी करने का मौक़ा न दिया) **जाएगा(35)** (जब ये सारी बातें सुन लीं) **तो** (उनसे यह भी समझ में आगया कि) **सारी तारीफ़े अल्लाह के लिए** (साबित) **हैं जो रब है आसमानों का और रब है ज़मीन का** (बल्कि) **वो तो रब है सारे जहानों का(36) और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और ज़मीन में, और वो ही ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **हिकमत वाला है(37)।**